

## M.A POL.SCI 3<sup>RD</sup> SEM

### THEORY AND PRACTICE OF DIPLOMACY

#### Chapter-1

**\*\*राजनय\*\*** शब्द का अर्थ है – "दो या दो से अधिक देशों के बीच शांति, सहयोग, समझौता, और आपसी हितों की रक्षा के लिए बातचीत और व्यवहार की कला।" **\*\*** उदाहरण: \* जब भारत और चीन सीमा विवाद को बातचीत से सुलझाने की कोशिश करते हैं, तो वह **\*\*राजनय\*\*** कहलाता है।

राजनय की परिभाषा विभिन्न राजनयिकों, राजनीतिज्ञों और विचारकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से दी है। नीचे कुछ प्रमुख राजनीतिक और विचारकों द्वारा दी गई **\*\*राजनय की परिभाषाएँ\*\*** दी गई हैं:

1. **\*\*हैन्स जे. मॉर्गेन्थाऊ (Hans J. Morgenthau)\*\***

**\*\*"राजनय वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों को दूसरे राष्ट्रों के साथ संवाद, समझौते और सौहार्दपूर्ण संबंधों द्वारा प्राप्त करते हैं।"\*\***

2. **\*\*हेनरी किसिंगर (Henry Kissinger)\*\***

**\*\*"राजनय, शक्ति और संवाद के बीच संतुलन की कला है, जिसके माध्यम से देश अपने उद्देश्य शांतिपूर्ण तरीकों से प्राप्त करते हैं।"\*\***

3. **\*\*सर हेरोल्ड निकोलसन (Sir Harold Nicolson)\*\***

**\*\*"राजनय, वह कला है जिसके माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को बुद्धिमत्ता, संयम और बातचीत द्वारा संचालित किया जाता है।"\*\***

4. **\*\*बिस्मार्क (Bismarck) – जर्मन चांसलर\*\***"राजनय युद्ध के बिना युद्ध की तरह होता है, जिसमें शब्द हथियार होते हैं।" **\*\***

hardson)\*\*

**\*\*"राजनय सरकारों के बीच औपचारिक संबंधों को बनाए रखने और संचालन की प्रक्रिया है।"\*\***

6. **\*\*पंडित जवाहरलाल नेहरू (भारत के पहले प्रधानमंत्री)\*\***

नेहरू का मानना था: **\*\*"राजनय राष्ट्रों के बीच समझ और सहयोग का पुल होता है।"\*\***

**\*\*राजनय का स्वरूप एवं विशेषताएँ (Nature and Characteristics of Diplomacy)\*\***

राजनय एक राष्ट्र के बाह्य संबंधों की व्यवस्था और संचालन की प्रक्रिया है, जो बातचीत, समझौते और शांतिपूर्ण साधनों के माध्यम से की जाती है। इसका स्वरूप समय, परिस्थिति और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के आधार पर बदलता रहता है।

**\*\*राजनय का स्वरूप (Nature of Diplomacy):\*\*** राजनय का स्वरूप समय के साथ बदलता रहा है। आधुनिक युग में यह केवल युद्ध टालने का माध्यम नहीं, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और रणनीतिक हितों को सुरक्षित रखने का प्रमुख साधन बन गया है।

राजनय का स्वरूप निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है:

1. **\*\*बहुपक्षीय (Multilateral)\*\*** – कई देशों के बीच बातचीत, जैसे कि संयुक्त राष्ट्र या G20 की बैठकें।
2. **\*\*द्विपक्षीय (Bilateral)\*\*** – दो देशों के बीच होने वाला संवाद, जैसे भारत और नेपाल के बीच बातचीत।
3. **\*\*गोपनीय एवं सार्वजनिक\*\*** – कुछ वार्ताएँ गोपनीय होती हैं, जबकि कुछ खुले मंचों पर होती हैं।
4. **\*\*राजनीतिक और आर्थिक प्रकृति का\*\*** – केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि व्यापार, निवेश, जलवायु आदि विषयों पर भी होता है।
5. **\*\*स्थायी संस्थागत ढाँचा\*\*** – आज का राजनय विशेष राजदूतों, दूतावासों, और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से संचालित होता है।

☐ **\*\*राजनय की प्रमुख विशेषताएँ (Main Characteristics of Diplomacy):\*\***

1. **\*\*शांतिपूर्ण साधन\*\***

→ राजनय का उद्देश्य युद्ध से बचाव करना और विवादों को संवाद से सुलझाना होता है।

2. **\*\*वार्ता एवं समझौते पर आधारित\*\***

→ इसमें संवाद, विचार-विमर्श और परस्पर समझौते के द्वारा समस्याओं का समाधान किया जाता है।

3. **\*\*राष्ट्रीय हितों की रक्षा\*\*** → राजनय का मुख्य कार्य राष्ट्र के राजनीतिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक हितों की रक्षा करना है।

4. **\*\*गोपनीयता (Secrecy)\*\***

→ कई बार बातचीत गुप्त रखी जाती है ताकि गलतफहमियाँ या तनाव न बढ़ें।

5. **\*\*अनुभवी और प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा संचालन\*\***

→ राजनयिक (Diplomats) विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और वे विदेशी मामलों के विशेषज्ञ होते हैं।

6. **\*\*समय और परिस्थिति के अनुसार लचीला\*\***

→ राजनयिक रणनीति को परिस्थिति के अनुसार बदला जा सकता है।

7. **\*\*राज्य का औपचारिक प्रतिनिधित्व\*\***

→ राजदूत या उच्चायुक्त दूसरे देश में अपने राष्ट्र का आधिकारिक प्रतिनिधित्व करते हैं।

8. **\*\*बहु-आयामी स्वरूप\*\***

→ आज के समय में यह केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आर्थिक, तकनीकी, पर्यावरणीय, और मानवाधिकार जैसे अनेक क्षेत्रों को भी कवर करता है।

निष्कर्ष: **\*\*राजनय एक विवेकपूर्ण, विचारशील और रणनीतिक प्रक्रिया है\*\***, जो राष्ट्रों के बीच संबंधों को बनाये रखने, विवादों को हल करने और वैश्विक स्तर पर शांति व सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। इसकी विशेषताएँ इसे एक कुशल और संवेदनशील प्रक्रिया बनाती हैं।

**\*\*राजनय का महत्व (Importance of Diplomacy)\*\*** राजनय किसी भी राष्ट्र की **\*\*विदेश नीति\*\*** को लागू करने का सबसे प्रभावी साधन है। यह राष्ट्रों के बीच **\*\*शांति, सहयोग, विश्वास और पारस्परिक समझ\*\*** को बढ़ावा देता है। आज के वैश्वीकरण के युग में, जब देश एक-दूसरे पर आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा के लिए निर्भर हैं, राजनय का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है।

☐ **\*\*राजनय का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:\*\***

1. ☐ **\*\*अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की स्थापना\*\*** राजनय का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह देशों के बीच होने वाले विवादों और संघर्षों को बातचीत के माध्यम से हल करने में सहायक होता है।

➔ उदाहरण: भारत और पाकिस्तान के बीच कई बार युद्ध की स्थिति को राजनयिक प्रयासों ने टाला।

2. ☐ **\*\*मैत्रीपूर्ण संबंधों का निर्माण\*\*** राजनय देशों के बीच **\*\*सौहार्दपूर्ण संबंध\*\*** बनाने और उन्हें बनाए रखने का काम करता है।

➔ जैसे भारत और रूस, भारत और जापान के मजबूत संबंधों में राजनयिक भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

3. ☐ **\*\*आर्थिक सहयोग को बढ़ावा\*\*** राजनयिक संबंधों के माध्यम से देश **\*\*व्यापार, निवेश, और आर्थिक साझेदारी\*\*** स्थापित करते हैं।

➔ जैसे भारत और UAE के बीच FTA (Free Trade Agreement)।

4. ☐ **\*\*राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा\*\*** हर देश के अपने रणनीतिक, राजनीतिक और आर्थिक हित होते हैं। राजनय इन हितों की **\*\*अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रक्षा\*\*** करता है।

→ उदाहरण: भारत का परमाणु करार अमेरिका के साथ राजनयिक सफलता का उदाहरण है।

5. ☐ **\*\*वैश्विक मंचों पर प्रतिनिधित्व\*\***

राजनयिक ही देश को संयुक्त राष्ट्र, WTO, G20 जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रतिनिधित्व करते हैं और देश की बात दुनिया के सामने रखते हैं।

6. ☐ **\*\*जलवायु परिवर्तन और वैश्विक मुद्दों पर सहयोग\*\***

राजनय के माध्यम से जलवायु, मानवाधिकार, आतंकवाद आदि जैसे वैश्विक मुद्दों पर सहयोग संभव हो पाता है।

→ जैसे पेरिस जलवायु समझौता एक राजनयिक प्रयास है।

7. ☐☐ **\*\*सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान\*\***

राजनयिक संबंधों से देशों के बीच **\*\*छात्रों, कलाकारों, और शिक्षाविदों\*\*** का आदान-प्रदान होता है, जो आपसी समझ को मजबूत करता है।

☐ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*राजनय एक ऐसा उपकरण है, जो युद्ध से बचाव करके शांतिपूर्ण तरीकों से समस्याओं का समाधान करता है।\*\***

यह राष्ट्रों को एक-दूसरे के निकट लाता है, सहयोग को बढ़ाता है और एक **\*\*स्थायी वैश्विक व्यवस्था\*\*** बनाने में सहायक होता है

## Chapter-2

☐ **\*\*राजनय का भविष्य (Future of Diplomacy):\*\*** आज के तेज़ी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में राजनय का स्वरूप भी बदल रहा है। **\*\*तकनीक, वैश्वीकरण, जलवायु संकट, और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा\*\*** ने राजनय को नई चुनौतियाँ और अवसर दिए हैं।

☐ **\*\*भविष्य की कुछ प्रमुख विशेषताएँ:\*\***

1. ☐ **\*\*डिजिटल राजनय (Digital Diplomacy)\*\*** → सोशल मीडिया, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और AI आधारित संवाद भविष्य के राजनय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

2. ☐ **\*\*साइबरी वैश्विक चुनौतियों पर फोकस\*\*** → जैसे जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, वैश्विक महामारी आदि पर सहयोग की ज़रूरत बढ़ेगी।

3. ☐ **\*\*टेक्नोलॉजी का बढ़ता प्रभाव\*\*** → साइबर डिप्लोमेसी, डेटा प्राइवेसी, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित बातचीत बढ़ेगी।

4. ☐ **\*\*बहुपक्षीयता की आवश्यकता\*\*** → अब सिर्फ द्विपक्षीय नहीं, बल्कि बहुपक्षीय समझौते और संगठनों का महत्व बढ़ रहा है (जैसे G20, QUAD, BRICS आदि)।

5. ☐ **\*\*राजनयिकों की भूमिका में परिवर्तन\*\*** → पारंपरिक राजनयिक के बजाय अब **\*\*रणनीतिक सलाहकार\*\***, **\*\*पब्लिक डिप्लोमैट\*\***, और **\*\*डिजिटल प्रवक्ता\*\*** की भूमिका बढ़ेगी।

6. ☐☐ **\*\*भारत के लिए अवसर\*\*** → भारत जैसे विकासशील देश के लिए भविष्य में राजनय वैश्विक नेतृत्व की ओर एक रास्ता बन सकता है — जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर नेतृत्व, "वैश्विक दक्षिण" की आवाज़ बनना, आदि।

☐ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*राजनय का आश\*\*** है — शांति, सहयोग और समझदारी से राष्ट्रों के बीच संबंधों को सुचारु बनाए रखना।

**\*\*भविष्य में राजनय और अधिक तकनीकी, समावेशी और वैश्विक मुद्दों पर केंद्रित होगा।\*\***

यह केवल सरकारों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि मीडिया, नागरिक समाज, और तकनीकी मंच भी इसकी प्रक्रिया में भाग लेंगे।

## ☐ **\*\*राजनय का हास (Decline of Diplomacy)\*\***

**\*\*राजनय का हास\*\*** का तात्पर्य है:

☐ जब देशों के बीच संवाद, सहमति और शांतिपूर्ण समाधान की परंपरा **\*\*कमज़ोर पड़ने लगे\*\***,

☐ और उसकी जगह **\*\*आक्रामक नीति\*\***, **\*\*शक्ति प्रदर्शन\*\***, या **\*\*एकतरफा निर्णय\*\*** लेने की प्रवृत्ति बढ़ने लगे —

तो उसे हम **\*\*राजनय का हास\*\*** कहते हैं।

## ☐ **\*\*राजनय के हास के कारण (Causes of the Decline of Diplomacy):\*\***

### 1. ☐ **\*\*आक्रामक राष्ट्रवाद और शक्ति की राजनीति (Power Politics)\*\***

कई देश अब **\*\*बल प्रयोग\*\*** या **\*\*सैन्य ताकत\*\*** के ज़रिए अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं।

\* कूटनीतिक समाधान को अनदेखा किया जा रहा है।

### 2. ☐ **\*\*मीडिया और सोशल मीडिया का प्रभाव\*\***

\* राजनय अब **\*\*लोकप्रियता की राजनीति\*\*** से प्रभावित हो गया है।

\* नेताओं के ट्वीट और बयानों से विवाद बढ़ते हैं, बजाय कि शांतिपूर्ण वार्ता हो।

3. ☐ **\*\*युद्ध और सैन्य हस्तक्षेप में वृद्धि\*\*** जैसे अमेरिका का ईराक, अफगानिस्तान में हस्तक्षेप या रूस-यूक्रेन युद्ध — ये सब **\*\*राजनय की असफलता\*\*** को दर्शाते हैं।

4. ☐ **\*\*बहुपक्षीय संगठनों की प्रभावहीनता\*\*** संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठन कई बार निष्क्रिय हो जाते हैं। \* बड़े राष्ट्र अपने हितों के अनुसार काम करते हैं, न कि वैश्विक सहमति के अनुसार।

5. ☐ **\*\*गोपनीयता की कमी और कूटनीति का राजनीतिकरण\*\*** \* राजनय अब **\*\*गोपनीय वार्ता\*\*** की बजाय **\*\*पब्लिक डिप्लोमेसी\*\*** बनता जा रहा है। इससे वास्तविक संवाद की जगह केवल **\*\*छवि निर्माण (Image Building)\*\*** रह गया है।

**\*\*राजनय के हास के दुष्परिणाम (Consequences of Decline of Diplomacy):\*\***

1. ॐ अंतरराष्ट्रीय तनाव और संघर्षों में वृद्धि
2. □ शांति की प्रक्रिया बाधित
3. ॐ आर्थिक प्रतिबंधों और व्यापार युद्धों में वृद्धि
4. ॐ विश्वास की कमी और सहयोग का पतन
5. ॐ युद्ध की आशंका अधिक होना

ॐ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*राजनय का हास वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए एक गंभीर खतरा है।\*\***

जब देश **\*\*संवाद छोड़कर टकराव का रास्ता अपनाते हैं\*\***, तब युद्ध और अव्यवस्था बढ़ती है।

ॐ इसीलिए, आज के समय में राजनय को **\*\*पुनः सशक्त और विश्वसनीय\*\*** बनाना आवश्यक है  
— ताकि

**\*\*विचारों से समाधान हो, न कि हथियारों से।\*\***



| ----- | ----- | ----- |

| **\*\*स्वरूप\*\*** | सैद्धांतिक और दीर्घकालिक | व्यावहारिक और तात्कालिक

|

| **\*\*भूमिका\*\*** | दिशा निर्धारित करती है | दिशा को लागू करता है

|

| **\*\*निर्माण\*\*** | सरकार द्वारा | अधिकारियों/राजनयिकों द्वारा

| **\*\*लक्ष्य\*\*** | राष्ट्रीय हितों की पहचान और सुरक्षा | उन हितों की प्राप्ति के लिए संवाद और प्रयास |

| **\*\*उदाहरण\*\*** | भारत की 'गुटनिरपेक्ष नीति' | भारत द्वारा NAM सम्मेलनों में भाग लेना

|

☐ **\*\*संक्षेप में\*\***:

> **\*\*विदेश नीति\*\*** = "क्या करना है?"

> **\*\*राजनय\*\*** = "कैसे करना है?"

☐ **\*\*एक उदाहरण से समझें\*\***

भारत की **\*\*"एक्ट ईस्ट नीति\*\*** एक **\*\*विदेश नीति\*\*** है,

और भारत द्वारा **\*\*जापान, वियतनाम, इंडोनेशिया आदि के साथ बातचीत और समझौते करना\*\***  
— ये **\*\*राजनय\*\*** है।

☐ **\*\*निष्कर्ष\*\***

**\*\*विदेश नीति और राजनय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।\*\***

**\*\*विदेश नीति\*\*** लक्ष्य तय करती है, \* जबकि **\*\*राजनय\*\*** उस लक्ष्य को हासिल करने की रणनीति और प्रक्रिया है। इन दोनों के प्रभावी तालमेल से ही कोई देश अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी **\*\*स्थापना, शक्ति और सम्मान\*\*** प्राप्त कर सकता है।

### ☐ **\*\*विदेश नीति के तत्व (Elements of Foreign Policy)\*\***

**\*\*विदेश नीति\*\*** किसी राष्ट्र की वह योजना या नीति होती है जिसके माध्यम से वह अन्य देशों से अपने संबंधों को स्थापित, संचालित और नियंत्रित करता है। हर देश की विदेश नीति उसके **\*\*राष्ट्रीय हितों\*\***, **\*\*इतिहास\*\***, **\*\*भूगोल\*\***, **\*\*संसाधनों\*\*** और **\*\*राजनीतिक सोच\*\*** के आधार पर बनती है।

☐ **\*\*विदेश नीति के प्रमुख तत्व:\*\***

1. ☐ **\*\*राष्ट्रीय हित (National Interest)\*\***

विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य **\*\*देश के हितों की रक्षा\*\*** और उन्हें आगे बढ़ाना होता है — जैसे सुरक्षा, आर्थिक लाभ, सांस्कृतिक पहचान आदि।

> ✓☐ उदाहरण: भारत की विदेश नीति में ऊर्जा सुरक्षा और सीमा सुरक्षा प्रमुख राष्ट्रीय हित हैं।

2. ☐ **\*\*भौगोलिक स्थिति (Geographical Location)\*\***

किसी देश का भौगोलिक स्थान उसकी विदेश नीति को प्रभावित करता है। सीमावर्ती देश, समुद्री रास्ते, पड़ोसी देशों की स्थिति इत्यादि विदेश नीति के निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

✓☐ उदाहरण: भारत की चीन और पाकिस्तान के साथ सीमा भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण कारक है।

3. ☐ **\*\*ऐतिहासिक अनुभव (Historical Background)\*\***

इतिहास में किसी देश के साथ हुए अनुभव (जैसे युद्ध, उपनिवेशवाद, गठबंधन) विदेश नीति को आकार देते हैं।

✓☐ उदाहरण: भारत की गुटनिरपेक्ष नीति (Non-alignment) का आधार उपनिवेशवाद के अनुभवों से जुड़ा है।

4. ☐ **\*\*राजनीतिक व्यवस्था और नेतृत्व (Political System & Leadership)\*\***

किस देश में किस प्रकार की सरकार है — लोकतंत्र, तानाशाही, राजशाही आदि — और वहाँ के नेताओं की सोच विदेश नीति को प्रभावित करती है।

✓  जैसे नेहरूजी की विचारधारा ने भारत की विदेश नीति को शांति और गुटनिरपेक्षता की दिशा दी।

5.  **\*\*आर्थिक संरचना और संसाधन (Economic Strength & Resources)\*\*** एक राष्ट्र की **\*\*आर्थिक ताकत\*\***, तकनीकी विकास, और संसाधनों की उपलब्धता उसकी विदेश नीति को मजबूती देती है।

✓  जैसे चीन की आर्थिक शक्ति उसकी आक्रामक विदेश नीति को समर्थन देती है।

6.  **\*\*सैन्य शक्ति (Military Power)\*\***

विदेश नीति को लागू करने के लिए **\*\*सैन्य क्षमता\*\*** का होना भी आवश्यक होता है। इससे देश अपनी सीमाओं की रक्षा कर सकता है और अंतरराष्ट्रीय मामलों में प्रभाव डाल सकता है।

✓  जैसे भारत की परमाणु शक्ति ने उसकी विदेश नीति को रणनीतिक गहराई दी।

7.  **\*\*अंतरराष्ट्रीय वातावरण (International Environment)\*\***

दुनिया की बदलती परिस्थितियाँ जैसे — युद्ध, शांति, व्यापार, वैश्विक गठबंधन आदि — विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।

✓  जैसे COVID-19 महामारी के दौरान विदेश नीतियाँ अधिक सहयोग और स्वास्थ्य कूटनीति की ओर बढ़ीं।

8.  **\*\*अंतरराष्ट्रीय संगठन और संधियाँ (International Organizations & Treaties)\*\***

संयुक्त राष्ट्र, WTO, G20, BRICS जैसे मंचों पर सदस्यता और सहभागिता भी विदेश नीति का अहम हिस्सा होती है।

9. ¶ **\*\*सार्वजनिक मत और मीडिया (Public Opinion & Media)\*\*** आज के लोकतांत्रिक युग में जनता की राय, मीडिया की भूमिका और सामाजिक दबाव विदेश नीति को प्रभावित कर सकते हैं।

✓ □ उदाहरण: श्रीलंका में तमिल मुद्दे को लेकर भारत की नीति में बदलाव।

¶ **\*\*निष्कर्ष: \*\*विदेश नीति\*\*** कई आंतरिक और बाहरी कारकों पर आधारित होती है। इन तत्वों का गहन विश्लेषण करके ही कोई देश एक **\*\*स्थिर, प्रभावी और यथार्थवादी\*\*** विदेश नीति बना सकता है।

### ¶ **\*\*विदेश नीति के लक्ष्य (Goals/Objectives of Foreign Policy)\*\***

**\*\*विदेश नीति\*\*** किसी राष्ट्र की वह रणनीति है, जिसके माध्यम से वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने **\*\*राष्ट्रीय हितों की रक्षा और संवर्धन\*\*** करता है। इसका उद्देश्य केवल अन्य देशों से संबंध बनाना नहीं होता, बल्कि उन संबंधों के माध्यम से **\*\*देश की सुरक्षा, विकास, सम्मान और स्थायित्व सुनिश्चित करना\*\*** होता है।

¶ **\*\*विदेश नीति के मुख्य लक्ष्य:\*\***

1. □ **\*\*राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करना\*\***

\* किसी भी देश की प्राथमिकता होती है अपनी **\*\*सीमा, संप्रभुता और स्वतंत्रता की रक्षा करना।\*\***

\* इसके लिए मित्र देशों से सहयोग, रक्षा संधियाँ, और सामरिक रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं।

✓ □ उदाहरण: भारत की रक्षा नीति में अमेरिका, रूस, और फ्रांस से सहयोग।

2. ¶ **\*\*आर्थिक हितों को बढ़ावा देना\*\*** \* व्यापार, निवेश, ऊर्जा, तकनीकी सहयोग आदि के माध्यम से **\*\*देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना\*\*** विदेश नीति का एक प्रमुख उद्देश्य होता है।

✓ □ उदाहरण: भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के अंतर्गत एशियाई देशों से व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा।

# 3. □ **\*\*अंतरराष्ट्रीय शांति और स्थिरता बनाए रखना\*\***

\* विदेश नीति का उद्देश्य केवल अपने देश की भलाई नहीं, बल्कि **\*\*वैश्विक शांति\*\*** और **\*\*स्थिरता में योगदान\*\*** देना भी होता है।

✓ □ जैसे भारत का संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में सक्रिय योगदान।

4. □ **\*\*सार्वभौमिकता और आत्मनिर्भरता की रक्षा\*\*** \* विदेश नीति यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी बाहरी शक्ति **\*\*देश की स्वतंत्रता या निर्णय लेने की क्षमता में हस्तक्षेप न करे।\*\***

✓ □ जैसे भारत की गुटनिरपेक्ष नीति का मूल उद्देश्य।

5. □ **\*\*सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का प्रसार\*\***

\* विदेश नीति के माध्यम से देश अपनी संस्कृति, परंपरा और **\*\*सॉफ्ट पावर\*\*** को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करता है।

✓ □ जैसे “International Yoga Day” की पहल, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा है।

6. □ **\*\*रणनीतिक सहयोग और गठबंधनों का निर्माण\*\***

सहयोगी देशों के साथ **\*\*राजनीतिक, सैन्य, तकनीकी और जलवायु\*\*** जैसे क्षेत्रों में साझेदारी स्थापित करना।

✓ □ जैसे भारत का QUAD, BRICS, और I2U2 जैसे मंचों में भागीदारी।

7. □ □ □ **\*\*प्रवासी नागरिकों और हितों की सुरक्षा\*\***

\* विदेश नीति के ज़रिए **\*\*अन्य देशों में बसे अपने नागरिकों की रक्षा\*\*** और सहायता करना।

✓ □ उदाहरण: ऑपरेशन गंगा, ऑपरेशन देवी शक्ति, आदि के तहत विदेशों में भारतीयों को सुरक्षित निकालना।

8. □ **\*\*वैश्विक संस्थाओं में प्रभाव बढ़ाना\*\*** \* संयुक्त राष्ट्र, WTO, IMF जैसे संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाना और निर्णयों को प्रभावित करना।

✓ □ जैसे भारत की UNSC स्थायी सदस्यता की मांग।

□ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*विदेश नीति के लक्ष्य बहुआयामी होते हैं — सुरक्षा से लेकर आर्थिक विकास, वैश्विक सहयोग से लेकर सांस्कृतिक प्रसार तक।**

एक सफल विदेश नीति वही होती है जो **\*\*लचीली, दूरदर्शी और यथार्थवादी\*\*** हो, और जो बदलते वैश्विक परिदृश्य में **\*\*राष्ट्रीय हितों की रक्षा\*\***

## Chapter-4

### शक्ति और राजनय

### ☐ **\*\*विदेश नीति के लक्ष्य (Goals/Objectives of Foreign Policy)\*\***

**\*\*विदेश नीति\*\*** किसी राष्ट्र की वह रणनीति है, जिसके माध्यम से वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने **\*\*राष्ट्रीय हितों की रक्षा और संवर्धन\*\*** करता है। इसका उद्देश्य केवल अन्य देशों से संबंध बनाना नहीं होता, बल्कि उन संबंधों के माध्यम से **\*\*देश की सुरक्षा, विकास, सम्मान और स्थायित्व सुनिश्चित करना\*\*** होता है।

☐ **\*\*विदेश नीति के मुख्य लक्ष्य:\*\***

1. ☐ **\*\*राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करना\*\***

\* किसी भी देश की प्राथमिकता होती है अपनी **\*\*सीमा, संप्रभुता और स्वतंत्रता की रक्षा करना\*\*** \* इसके लिए मित्र देशों से सहयोग, रक्षा संधियाँ, और सामरिक रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं। > ✓ ☐ उदाहरण: भारत की रक्षा नीति में अमेरिका, रूस, और फ्रांस से सहयोग।

2. ☐ **\*\*आर्थिक हितों को बढ़ावा देना\*\*** \* व्यापार, निवेश, ऊर्जा, तकनीकी सहयोग आदि के माध्यम से **\*\*देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना\*\*** विदेश नीति का एक प्रमुख उद्देश्य होता है।> ✓ ☐ उदाहरण: भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के अंतर्गत एशियाई देशों से व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा।

3. ☐ **\*\*अंतरराष्ट्रीय शांति और स्थिरता बनाए रखना\*\*** \* विदेश नीति का उद्देश्य केवल अपने देश की भलाई नहीं, बल्कि **\*\*वैश्विक शांति\*\*** और **\*\*स्थिरता में योगदान\*\*** देना भी होता है।>

✓ ☐ जैसे भारत का संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में सक्रिय योगदान। 4. ☐ **\*\*सार्वभौमिकता और आत्मनिर्भरता की रक्षा\*\***

\* विदेश नीति यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी बाहरी शक्ति **\*\*देश की स्वतंत्रता या निर्णय लेने की क्षमता में हस्तक्षेप न करे।\*\***

✓ □ जैसे भारत की गुटनिरपेक्ष नीति का मूल उद्देश्य।

5. □ **\*\*सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का प्रसार\*\***

विदेश नीति के माध्यम से देश अपनी संस्कृति, परंपरा और **\*\*सॉफ्ट पावर\*\*** को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करता है।

✓ □ जैसे “International Yoga Day” की पहल, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा है।

6. □ **\*\*रणनीतिक सहयोग और गठबंधनों का निर्माण\*\*** \* सहयोगी देशों के साथ **\*\*राजनीतिक, सैन्य, तकनीकी और जलवायु\*\*** जैसे क्षेत्रों में साझेदारी स्थापित करना।

✓ □ जैसे भारत का QUAD, BRICS, और I2U2 जैसे मंचों में भागीदारी।

7. □ **\*\*प्रवासी नागरिकों और हितों की सुरक्षा\*\***

विदेश नीति के ज़रिए **\*\*अन्य देशों में बसे अपने नागरिकों की रक्षा\*\*** और सहायता करना।

✓ □ उदाहरण: ऑपरेशन गंगा, ऑपरेशन देवी शक्ति, आदि के तहत विदेशों में भारतीयों को सुरक्षित निकालना।

8. □ **\*\*वैश्विक संस्थाओं में प्रभाव बढ़ाना\*\***

संयुक्त राष्ट्र, WTO, IMF जैसे संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाना और निर्णयों को प्रभावित करना।

✓ □ जैसे भारत की UNSC स्थायी सदस्यता की मांग।

□ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*विदेश नीति के लक्ष्य बहुआयामी होते हैं —\*\*** सुरक्षा से लेकर आर्थिक विकास, वैश्विक सहयोग से लेकर सांस्कृतिक प्रसार तक।

एक सफल विदेश नीति वही होती है जो **\*\*लचीली, दूरदर्शी और यथार्थवादी\*\*** हो, और जो बदलते वैश्विक परिदृश्य में **\*\*राष्ट्रीय हितों की रक्षा\*\*** कर सक

## Chapter-5

### राजनयिक व्यवहार का विकास

### 2 \*\*राजनयिक व्यवहार का विकास (Evolution of Diplomatic Behavior)\*\*

राजनयिक व्यवहार का अर्थ है वह तरीका या शैली जिससे देश अपने विदेश संबंधों को संचालित करते हैं। यह व्यवहार समय के साथ बदलता रहता है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय वातावरण, तकनीक, राजनीति और सामाजिक मान्यताएँ बदलती हैं।

#### 1. \*\*प्राचीन काल में राजनयिक व्यवहार\*\*

\* प्राचीन सभ्यताओं जैसे मिस्र, मेसोपोटामिया, भारत (मौर्य काल), यूनान और चीन में राजनयिक व्यवहार के पहले उदाहरण मिले हैं।

\* राजदूतों को \*\*राजाओं के संदेशवाहक\*\* माना जाता था।

\* अधिकांश संवाद व्यक्तिगत और औपचारिक होते थे, जिसमें \*\*शक्ति प्रदर्शन\*\* और \*\*सहमति बनाए रखना\*\* मुख्य था।

\* उदाहरण: मौर्य सम्राट अशोक ने विदेशों में अपने संदेश भेजे।

2. \*\*मध्यकालीन काल में राजनयिक व्यवहार\*\* यूरोप में राजनयिक व्यवहार का विकास हुआ और राजदूतों को \*\*स्थायी प्रतिनिधि\*\* के रूप में नियुक्त किया जाने लगा।

\* चर्च और धर्म ने भी राजनय को प्रभावित किया।

\* राजनय में \*\*गोपनीयता\*\*, \*\*विनम्रता\*\* और \*\*सहानुभूति\*\* की भूमिका बढ़ी।

\* मध्यकालीन यूरोप में \*\*राजनीतिक विवाह\*\* और गठबंधन राजनयिक व्यवहार का महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

#### 3. \*\*आधुनिक काल में राजनयिक व्यवहार\*\*

\* 1648 के वेस्टफेलिया संधि ने आधुनिक राज्य व्यवस्था और राजनय के नियम बनाए।

\* राजनयिक व्यवहार अब **सौहार्दपूर्ण वार्ता**, **मौलिक अधिकारों** और **अंतरराष्ट्रीय कानून** पर आधारित होने लगा।

\* **स्थायी राजदूतावास (Embassies)** और **कांसुलेट्स** का निर्माण हुआ।

\* राजनयिक विशेषाधिकार (Diplomatic Immunity) की परिभाषा हुई।

\* द्विपक्षीय और बहुपक्षीय वार्ताओं का महत्व बढ़ा।

#### 4. **आधुनिक समय और डिजिटल युग में विकास**

\* सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने राजनयिक व्यवहार को बदल दिया।

\* **डिजिटल राजनय (Digital Diplomacy)** के माध्यम से देशों के संवाद और प्रचार-प्रसार के नए तरीके आए।

\* सार्वजनिक कूटनीति (Public Diplomacy) का महत्व बढ़ा — जहाँ सीधे जनता से संवाद किया जाता है।

\* राजनयिक व्यवहार अब अधिक **पारदर्शी**, **तेज़** और **बहु-आयामी** हो गया है।

#### 5. **वर्तमान चुनौतियाँ और विकास**

\* आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक महामारी जैसी समस्याओं ने राजनयिक व्यवहार को और जटिल बनाया।

\* सहयोग, बहुपक्षीय वार्ता और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों का महत्व बढ़ा।

\* राजनय में सैन्य शक्ति, आर्थिक दबाव और सॉफ्ट पावर के संतुलन की आवश्यकता बढ़ी।

**निष्कर्ष:** राजनयिक व्यवहार का विकास सदैव अंतरराष्ट्रीय परिवर्तनों के अनुरूप होता रहा है। प्राचीन काल के व्यक्तिगत और शक्ति आधारित संवाद से आज के बहुपक्षीय, तकनीकी और सामूहिक व्यवहार की ओर यह एक लंबा सफर है। आधुनिक राजनयिक व्यवहार में **परस्पर सम्मान, संवाद, सहयोग और सामूहिक सुरक्षा** को प्राथमिकता दी जाती है।

### □ **यूनान का राजनय (Diplomacy of Ancient Greece)**

☐ **परिचय:** प्राचीन यूनान (Greece) को **राजनय (Diplomacy)** के प्रारंभिक और व्यवस्थित विकास का केंद्र माना जाता है।

5वीं शताब्दी ईसा-पूर्व के यूनान में विभिन्न **नगर-राज्य (City-States)** जैसे एथेंस, स्पार्टा, थेब्स आदि स्वतंत्र रूप से शासित होते थे, जिनके बीच अक्सर युद्ध, संधियाँ, और गठबंधन बनते रहते थे।

इसलिए, **राजनयिक संवाद** एक आवश्यक राजनीतिक उपकरण बन गया था।

**यूनान के राजनय की प्रमुख विशेषताएँ:**

1. ☐ **नगर-राज्य आधारित राजनय** यूनान में कोई केंद्रीकृत राष्ट्र नहीं था, बल्कि छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्य थे।\* प्रत्येक नगर-राज्य (जैसे एथेंस और स्पार्टा) का **अपना अलग राजनय** होता था।\* इन राज्यों को बाहरी खतरों से निपटने और आपसी विवाद सुलझाने के लिए **राजनयिक संपर्क** आवश्यक था।

2. ☐ **राजदूतों (Envoys) की नियुक्ति** राजनयिक कार्यों के लिए अस्थायी **राजदूत (Envoys or Ambassadors)** भेजे जाते थे।\* ये राजदूत संधियाँ करने, युद्ध रोकने या गठबंधन बनाने के लिए दूसरे नगर-राज्यों में जाते थे। \* इन्हें यूनानी में **"Presbeis"** कहा जाता था।

3. ☐ **वाकपटुता और तर्कशक्ति का महत्व** यूनानी संस्कृति में **वाकपटुता (Rhetoric)** और **तर्क** का बड़ा महत्व था।

\* राजदूतों को उनके **विचार प्रस्तुत करने की क्षमता**, तर्कशक्ति और संवाद शैली के लिए चुना जाता था।

\* यह राजनयिक व्यवहार के विकास में एक प्रमुख योगदान था।

4. ☐ **संधियों और समझौतों का प्रारंभिक रूप**

\* यूनान में **लिखित संधियाँ (Treaties)** का प्रयोग शुरू हुआ।

\* ये संधियाँ शांति, व्यापार, सैन्य सहयोग आदि से संबंधित होती थीं।

\* इन्हें मंदिरों में रखा जाता था ताकि वे पवित्र और सार्वजनिक रूप से मान्य हों।

## 5. ☐ **गठबंधन और कूटनीतिक संघ (Leagues)**

यूनान में दो बड़े गठबंधन बने:

\* **डेलियन लीग (Delian League)** — एथेंस के नेतृत्व में

\* **पेलोपोनेशियन लीग (Peloponnesian League)** — स्पार्टा के नेतृत्व में

\* इन गठबंधनों का उद्देश्य था सैन्य और राजनीतिक सहयोग, जो कूटनीति के माध्यम से ही संचालित होता था।

## 6. ☐ **लोकतांत्रिक राजनय**

\* एथेंस जैसे नगर-राज्य में राजनयिक निर्णय **जनसभा (Assembly)** के माध्यम से लिए जाते थे।

\* इसलिए यूनान का राजनय केवल राजा या सम्राट तक सीमित नहीं था, बल्कि **जनता की भागीदारी** से भी संचालित होता था।

## 7. ☐ **शांति और युद्ध के बीच संतुलन**

\* राजनय का उद्देश्य था युद्ध टालना, परंतु यदि आवश्यक हुआ तो **रणनीतिक तैयारी** भी करना।

\* यह दृष्टिकोण आधुनिक राजनय की नींव माना जाता है।

## ☐ **महत्त्व:**

\* यूनान ने राजनय को **राजनीतिक दर्शन**, **तर्क**, और **नैतिकता** से जोड़ा।

\* यह पहला समाज था जिसने राजनय को केवल शक्ति का खेल न मानकर एक **बौद्धिक और नैतिक कार्य** भी माना।

\* आज के **अंतरराष्ट्रीय संबंधों, शांति वार्ता**, और **गठबंधन राजनीति** की जड़ें यूनानी राजनय में देखी जा सकती हैं।

☐ **निष्कर्ष:** प्राचीन यूनान का राजनय विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

यहां से राजनय को **व्यवस्थित, संवाद-केंद्रित और तर्कप्रधान प्रक्रिया** के रूप में देखा जाने लगा। आज के आधुनिक राजनयिक मूल्यों — जैसे **संवाद, सहयोग, संधि, और शांतिपूर्ण समाधान** — की नींव प्राचीन यूनान में ही रखी गई थी।

### ☐ **प्राचीन रोम का राजनय (Diplomacy of Ancient Rome)**

☐ **परिचय:** प्राचीन रोम (Roman Empire) ने न केवल युद्ध कौशल, प्रशासन और कानून में महान योगदान दिया, बल्कि **राजनय (Diplomacy)** के क्षेत्र में भी उसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। रोम का राजनय बहुत **व्यवस्थित, व्यावहारिक और साम्राज्य विस्तार** पर केंद्रित था। जहाँ प्राचीन यूनान ने राजनय को **तर्क और संवाद** से जोड़ा, वहीं **रोम ने राजनय को शक्ति, रणनीति और व्यवस्था** से जोड़कर विकसित किया।

☐ **1. प्रारंभिक काल में राजनय (Roman Republic Period)** रोम एक **गणराज्य (Republic)** के रूप में विकसित हुआ (509 ईसा-पूर्व से)।

\* इस काल में राजनय का उपयोग मुख्यतः **पड़ोसी राज्यों और जनजातियों** से संबंध बनाने व युद्ध टालने हेतु किया जाता था।

☐ **विशेषताएँ:** \* राजनयिकों को **राज्य सभा (Senate)** द्वारा नियुक्त किया जाता था।

\* उनके पास सीमित समय के लिए अधिकार होता था, और वे वापस आकर **रिपोर्ट** प्रस्तुत करते थे।

\* अधिकतर मिशन **गुटनिरपेक्ष, तटस्थ या शांति-प्रस्तावक** होते थे।

☐ **2. साम्राज्य काल में राजनय (Roman Empire Period)** जब रोम एक साम्राज्य बन गया (27 ईसा-पूर्व से), तो उसका राजनय और अधिक **संगठित, रणनीतिक और प्रभावशाली** हो गया।

प्रमुख विशेषताएँ: (a) **राजनय साम्राज्य विस्तार का उपकरण** रोम ने कई बार **राजनय के ज़रिए पहले मित्रता** बनाई और फिर बाद में **राजनीतिक या सैन्य नियंत्रण** स्थापित किया। यह **"Divide and Rule"** की नीति का एक प्रारंभिक रूप था।

(b) **संधियाँ और गठबंधन (Treaties & Alliances)** रोम दूसरे राज्यों के साथ लिखित **संधियाँ (Foedus)** करता था, जिनमें कर, व्यापार, सुरक्षा, आदि के नियम होते थे।

\* ये संधियाँ अक्सर एकतरफा होती थीं, जिनमें रोम का प्रभुत्व होता था।

(c) **गवर्नर और दूतों की नियुक्ति** रोम ने विभिन्न विजित क्षेत्रों में **राजनयिक प्रतिनिधि** या **गवर्नर** नियुक्त किए जो वहां रोम की नीतियों को लागू करते थे।

\* राजदूतों को कभी-कभी **"Legatus"** कहा जाता था।

(d) **कूटनीति के साथ शक्ति प्रदर्शन** राजनय का प्रयोग शांतिपूर्ण वार्ता के लिए होता था, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर तुरंत **सैन्य कार्रवाई** भी होती थी।

\* इसे "Diplomacy backed by force" कहा जा सकता है।

**3. रोम के राजनय की विशेषताएँ (Key Features):**

विशेषता	विवरण
<b>व्यवस्थित प्रशासनिक प्रक्रिया</b>	राजदूतों की नियुक्ति, अधिकार और जवाबदेही स्पष्ट रूप से तय होती थी।
<b>राजनय और कानून का समन्वय</b>	रोम ने राजनय में अपने <b>कानूनी सिद्धांतों</b> का उपयोग किया, जो आज के अंतरराष्ट्रीय कानून की नींव हैं।
<b>प्रभाव और नियंत्रण की रणनीति</b>	राजनय के ज़रिए पहले मित्रता, फिर प्रभुत्व की नीति अपनाई जाती थी।

| **\*\*राजनय में धर्म का उपयोग\*\*** | रोम धार्मिक अनुष्ठानों और देवताओं की कसम खाकर संधियाँ करता था, जिससे वे अधिक "पवित्र" मानी जाती थीं। |

**\*\*4. रोम का राजनय और आधुनिक कूटनीति पर प्रभाव\*\***

| क्षेत्र | प्रभाव

|

| ----- | -----  
----- |

| **\*\*राजदूत प्रणाली\*\*** | रोम में अस्थायी नहीं, बल्कि कभी-कभी **\*\*स्थायी दूत\*\*** भी भेजे जाते थे। यही परंपरा आगे स्थायी दूतावासों का आधार बनी। |

| **\*\*संधि-व्यवस्था\*\*** | रोम की लिखित संधियाँ आज के **\*\*अंतरराष्ट्रीय समझौतों (Treaties)\*\*** के प्रारंभिक रूप मानी जाती हैं। |

| **\*\*राजनय में शक्ति और वार्ता का मिश्रण\*\*** | आज की "Smart Diplomacy" या "Strategic Diplomacy" की जड़ें रोम की रणनीति में मिलती हैं। |

**\*\*निष्कर्ष (Conclusion):\*\*** प्राचीन रोम का राजनय केवल संवाद तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक **\*\*रणनीतिक, शक्ति-आधारित और कानून-संगत प्रक्रिया\*\*** थी। रोम ने राजनय को एक **\*\*राजनीतिक हथियार\*\*** की तरह प्रयोग किया, जिससे उसने न केवल शांति स्थापित की, बल्कि एक विशाल साम्राज्य खड़ा किया। [2] आज की आधुनिक कूटनीति की कई नींवें — जैसे संधियाँ, स्थायी दूतावास, राजनयिक अधिकार, और राजनयिक भाषा — प्राचीन रोम से प्रेरित हैं।

### [2] **\*\*इटली का राजनय (Diplomacy of Italy) — एक विस्तृत अध्ययन\*\***

**\*परिचय:\*** **\*\*इटली का राजनय\*\***, यानी इटली की विदेश नीति और कूटनीति का इतिहास, एक गहरा और विविध विषय है। इटली ने प्राचीन रोम के काल से लेकर आधुनिक यूरोप तक **\*\*राजनय के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई\*\*** है।

इटली का राजनय दो प्रमुख कालखंडों में बाँटा जा सकता है: 1. □ **\*\*प्राचीन काल (Ancient Rome)\*\*** — जहाँ रोम साम्राज्य ने राजनय को शक्ति और नियंत्रण का उपकरण बनाया।

2. □ **\*\*आधुनिक काल (Modern Italy)\*\*** – 19वीं सदी के बाद जब इटली एकीकृत हुआ और एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अंतरराष्ट्रीय मंच पर उभरा।

1. प्राचीन काल में इटली (रोम) का राजनय**\*\*** □ **\*इस हिस्से को आपने पहले ही पढ़ा – प्राचीन रोम का राजनय शक्ति-आधारित, संगठित और साम्राज्यवादी था।\***

2. आधुनिक इटली का राजनय (Post-1861):**\*\*** इटली 1861 में एकीकृत हुआ था। इसके बाद इटली ने स्वतंत्र रूप से अपनी **\*\*विदेश नीति और राजनयिक संबंधों\*\*** का निर्माण शुरू किया।

**\*मुख्य चरण:\*\*** (A) एकीकरण के बाद (1861–1914):**\*\***

□ लक्ष्य:

यूरोपीय शक्तियों में अपनी **\*\*स्थिति मजबूत करना\*\***।

\* **\*\*औपनिवेशिक साम्राज्य\*\*** बनाना (अफ्रीका में)।

\* ऑस्ट्रिया और फ्रांस के साथ संतुलित संबंध रखना।

□ विशेषताएँ:

यथार्थवादी राजनय**\*\*** (Realpolitik) अपनाया गया।

\* इटली ने **\*\*त्रैतीय संधि (Triple Alliance)\*\*** (1882) में जर्मनी और ऑस्ट्रिया के साथ गठबंधन किया।

(B) प्रथम विश्व युद्ध और अंतरयुद्ध काल (1914–1945):**\*\***

के दौरान:

पहले तटस्थ रहा, फिर 1915 में **\*\*Triple Entente (ब्रिटेन, फ्रांस, रूस)\*\*** का साथ दिया।

\* युद्ध के बाद इटली को **\*\*उम्मीद से कम लाभ\*\*** मिला, जिससे राजनयिक असंतोष पैदा हुआ।

फासीवादी युग (1922–1943):

**\*\*मुसोलिनी\*\*** के शासन में इटली का राजनय आक्रामक हुआ।

\* उसने **\*\*लीग ऑफ नेशंस की अवहेलना\*\*** करते हुए इथियोपिया पर हमला किया (1935)।

\* WWII में इटली ने **\*\*जर्मनी के साथ गठबंधन (Axis Powers)\*\*** किया।

C) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद (1945-वर्तमान):\*\*

लक्ष्य: **\*\*शांति, पुनर्निर्माण और यूरोपीय सहयोग\*\***।

\* अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ मजबूत संबंध।

☑ विशेषताएँ:

1. **\*\*नाटो (NATO)\*\*** की सदस्यता – 1949

2. **\*\*यूरोपीय संघ (EU)\*\*** में अग्रणी भूमिका

3. **\*\*अंतरराष्ट्रीय संगठनों\*\*** में सक्रिय भागीदारी – जैसे UN, G7, WTO

4. **\*\*मध्य-पूर्व, अफ्रीका और भूमध्यसागर क्षेत्र\*\*** में कूटनीतिक संतुलन बनाए रखना

**\*\*इटली की समकालीन विदेश नीति (Contemporary Diplomacy):\*\***

| क्षेत्र | नीति / भूमिका

| ----- | ----- |

| ☑ यूरोपीय संघ | यूरोपीय एकीकरण का समर्थक, EU नीति निर्धारण में सक्रिय

| ☑ अमेरिका | ट्रांस-अटलांटिक सहयोग को प्राथमिकता, NATO में अहम सहयोगी

| ☑ अफ्रीका और मध्य-पूर्व | ऊर्जा, आप्रवासन और शांति प्रयासों में सक्रिय

| ☑ जलवायु परिवर्तन | हरित ऊर्जा और जलवायु कूटनीति का समर्थनकर्ता

| ☑ सांस्कृतिक कूटनीति | कला, शिक्षा, फैशन, और विरासत के माध्यम से "Soft Power" का प्रयोग |

**\*इटली के राजनय की विशेषताएँ:\*\***

1. **☐ बहुपक्षीयता (Multilateralism):\*\***

इटली कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय है।

2. **☐ संतुलन की कूटनीति (Balanced Diplomacy):\*\***

पश्चिमी जगत, अफ्रीका और इस्लामी देशों के बीच संतुलन बनाए रखता है।

3. **☐ सांस्कृतिक प्रभाव:\*\***

इटली अपने इतिहास, कला, वास्तुकला और फैशन के जरिए **\*सॉफ्ट पावर\*** का उपयोग करता है।

4. **☐ शांति प्रयासों में भागीदारी:\*\***

इटली ने कई संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सैनिक भेजे हैं।

**\*निष्कर्ष (Conclusion):\*\*** इटली का राजनय प्राचीन रोम से लेकर आधुनिक लोकतांत्रिक गणराज्य तक एक **\*लंबा और विकसित इतिहास\*** है। जहाँ रोम साम्राज्य शक्ति और सैन्य विस्तार के लिए राजनय का प्रयोग करता था, वहीं आधुनिक इटली **\*शांति, सहयोग और संस्कृति\*** के माध्यम से अपनी विदेश नीति चलाता है। इटली ने कूटनीति के क्षेत्र में न केवल **\*राजनीतिक योगदान\*** दिया है, बल्कि उसने **\*सांस्कृतिक, नैतिक और आर्थिक राजनय\*** में भी अपनी छवि सशक्त रूप से स्थापित की है। फ्रांस का राजनय (Diplomacy of France) एक प्रभावशाली और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण विषय है। फ्रांस विश्व के प्रमुख देशों में से एक है और इसकी विदेश नीति वैश्विक मंच पर गहरा प्रभाव डालती है। नीचे फ्रांस के राजनय के मुख्य पहलुओं पर जानकारी दी गई है:

1. **\*राजनयिक स्थिति और भूमिका\***

\* फ्रांस **\*संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद\*** का **\*स्थायी सदस्य\*** है और इसके पास **\*वीटो अधिकार\*** है। \* यह **\*G7\***, **\*G20\***, **\*NATO\***, **\*EU\***, **\*La Francophonie\*** (फ्रेंच भाषी देशों का समूह), और **\*OECD\*** जैसे महत्वपूर्ण संगठनों का सदस्य है। फ्रांस खुद को

**\*\*बहुपक्षीयता\*\*** (Multilateralism), **\*\*मानवाधिकारों\*\***, और **\*\*संस्कृति के प्रचार-प्रसार\*\*** का समर्थनकर्ता मानता है।

## 2. **\*\*विदेश नीति के उद्देश्य\*\***

- \* वैश्विक शांति और सुरक्षा को बनाए रखना।
- \* यूरोपीय एकता को बढ़ावा देना (EU के माध्यम से)।
- \* अफ्रीका, एशिया और मध्य पूर्व में रणनीतिक साझेदारी बनाना।
- \* जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और परमाणु प्रसार जैसे वैश्विक मुद्दों से निपटना।

## 3. **\*\*यूरोपीय संघ (EU) में भूमिका\*\***

- \* फ्रांस, EU का **\*\*संस्थापक सदस्य\*\*** है।
- \* यूरोपीय नीतियों को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभाता है, विशेषकर आर्थिक और रक्षा मामलों में।
- \* जर्मनी के साथ मिलकर फ्रांस, EU की "फ्रैंको-जर्मन धुरी" (Franco-German Axis) का निर्माण करता है

## 4. **\*\*भारत-फ्रांस संबंध\*\*** भारत और फ्रांस के बीच **\*\*रणनीतिक साझेदारी\*\*** है (1998 से)।

- \* रक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, व्यापार, और जलवायु परिवर्तन पर सहयोग।
- \* राफेल लड़ाकू विमान सौदा भारत-फ्रांस रक्षा संबंधों का प्रमुख उदाहरण है।

## 5. **\*\*अफ्रीकी देशों के साथ संबंध\*\***

- \* फ्रांस का अफ्रीका में ऐतिहासिक उपनिवेश रहा है, विशेषकर पश्चिम अफ्रीका में।
- \* आज भी फ्रांस अफ्रीकी देशों के साथ आर्थिक, सैन्य और सांस्कृतिक सहयोग बनाए रखता है।
- \* हालाँकि हाल के वर्षों में कई अफ्रीकी देशों में फ्रांस विरोधी भावनाएँ बढ़ी हैं।

▣ 6. **फ्रांस की सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy)** फ्रेंच भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए **Alliance Française** जैसी संस्थाओं के माध्यम से काम करता है।

\* दुनिया भर में फ्रांसीसी विश्वविद्यालयों और छात्रवृत्तियों के माध्यम से "सॉफ्ट पावर" बढ़ाने का प्रयास करता है।

▣ 7. **महत्वपूर्ण राजनयिक सिद्धांत** स्वतंत्र विदेश नीति (Gaullist Policy): फ्रांस अपनी विदेश नीति को अमेरिका या किसी अन्य शक्ति से स्वतंत्र रखता है।

\* परमाणु स्वतंत्रता: फ्रांस ने अपनी स्वतंत्र परमाणु नीति विकसित की है (Force de frappe)।

"फ्रांस राजनय की देन" का अर्थ है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति, कूटनीति और वैश्विक संबंधों के क्षेत्र में फ्रांस ने क्या महत्वपूर्ण योगदान (contributions) दिए हैं। फ्रांस की राजनयिक परंपरा बहुत पुरानी और समृद्ध है। आइए इसे कुछ प्रमुख बिंदुओं में समझते हैं:

**फ्रांस की राजनय की प्रमुख देन (Contributions of French Diplomacy):**

▣ 1. **आधुनिक राजनय की नींव (Foundation of Modern Diplomacy)**

\* फ्रांस को **आधुनिक राजनय** का जनक माना जाता है।

\* 17वीं शताब्दी में **Cardinal Richelieu** (फ्रांसीसी प्रधानमंत्री) ने स्थायी राजदूतों की व्यवस्था की शुरुआत की।

\* इसने राष्ट्रों के बीच **स्थायी दूतावास प्रणाली (Permanent Embassies)** की नींव रखी, जो आज वैश्विक कूटनीति का मूल ढांचा है।

▣ 2. **वियना संधि (Congress of Vienna - 1815) में भूमिका** नेपोलियन युद्धों के बाद, फ्रांस ने यूरोप की नई राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण में भाग लिया।

\* संतुलन की नीति (Balance of Power) को मान्यता दी गई, जिससे यूरोपीय देशों में शांति बनी रही।

3. **मानवाधिकार और लोकतंत्र का प्रचार** **फ्रेंच क्रांति (1789)** ने "Liberty, Equality, Fraternity" का संदेश पूरी दुनिया को दिया। यह राजनयिक रूप से उन देशों को प्रभावित करता रहा जो मानवाधिकार और लोकतंत्र की ओर बढ़े।

\* फ्रांस अक्सर अपनी विदेश नीति में **मानवाधिकारों की रक्षा** को प्राथमिकता देता है।

4. **बहुपक्षवाद (Multilateralism) का समर्थन** फ्रांस हमेशा **संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ, G7, G20** जैसे संगठनों में बहुपक्षीय संवाद और सहयोग को बढ़ावा देता रहा है।

\* यह नीति अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को **साझे प्रयासों से हल करने** पर बल देती है।

5. **सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy)** फ्रांस ने संस्कृति को एक कूटनीतिक हथियार (Soft Power) के रूप में इस्तेमाल किया।

\* **Alliance Française** जैसे संस्थानों के ज़रिए फ्रेंच भाषा और संस्कृति का वैश्विक प्रचार।

\* कला, फिल्म, साहित्य, फैशन और शिक्षा के ज़रिए वैश्विक प्रभाव।

6. **जलवायु कूटनीति (Climate Diplomacy)** फ्रांस ने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर वैश्विक नेतृत्व किया।

\* **पेरिस जलवायु समझौता (Paris Climate Agreement, 2015)** फ्रांस की ऐतिहासिक कूटनीतिक सफलता है।

\* इस समझौते ने लगभग सभी देशों को जलवायु संकट से निपटने के लिए एक मंच पर लाया।

7. **"गॉलिस्ट" विदेश नीति (Gaullist Foreign Policy)** **चार्ल्स डी गॉल** के नेतृत्व में फ्रांस ने स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई।

\* यह नीति अमेरिका या किसी अन्य महाशक्ति की छाया में न रहकर **स्वतंत्र निर्णय लेने** पर आधारित थी। इससे फ्रांस की छवि एक **स्वतंत्र वैश्विक शक्ति** के रूप में बनी।

8. **अफ्रीका में कूटनीतिक प्रभाव** उपनिवेशवाद के दौर के बाद भी फ्रांस ने अफ्रीकी देशों के साथ मजबूत संबंध बनाए रखे।

\* आर्थिक, सैन्य और भाषाई संबंधों के ज़रिए फ्रांस का प्रभाव अफ्रीका में आज भी है।

निष्कर्ष (Conclusion): फ्रांस ने राजनय के क्षेत्र में स्थायी दूतावास प्रणाली, बहुपक्षीय संवाद, मानवाधिकारों का समर्थन, जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक नेतृत्व, और सांस्कृतिक प्रभाव जैसे कई क्षेत्रों में विश्व को महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। इसकी राजनयिक सोच स्वतंत्रता, सहयोग और वैश्विक जिम्मेदारी पर आधारित रही है।

भारत का राजनय (Foreign Policy of India / भारत की विदेश नीति) देश की **अंतरराष्ट्रीय पहचान, हितों की रक्षा**, और **वैश्विक संतुलन** बनाने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह नीति भारत की ऐतिहासिक परंपराओं, भू-राजनीतिक स्थिति, आर्थिक हितों और सुरक्षा आवश्यकताओं से प्रेरित होती है।

☞ **भारत का राजनय: एक संक्षिप्त परिचय**

☞ 1. **विदेश नीति के प्रमुख सिद्धांत (Main Principles of Indian Foreign Policy)**

☞ **पंचशील के सिद्धांत (Five Principles of Peaceful Coexistence)**

1954 में चीन के साथ हस्ताक्षरित:

1. एक-दूसरे की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान
2. एक-दूसरे पर आक्रमण न करना
3. एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना
4. समानता और पारस्परिक लाभ
5. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व

☞ **गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment)** \* शीत युद्ध के दौरान भारत ने अमेरिका या सोवियत संघ में से किसी भी गुट का हिस्सा बनने से इनकार किया।

\* **जवाहरलाल नेहरू** इसके प्रमुख वास्तुकार माने जाते हैं।

☐ **\*\*वैश्विक शांति और सहयोग\*\*** \* भारत हमेशा अंतरराष्ट्रीय विवादों का **\*\*शांतिपूर्ण समाधान\*\*** और **\*\*संवाद से हल\*\*** निकालने का पक्षधर रहा है।

☐ 2. **\*\*भारत की विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य (Key Objectives)\*\***

- \* **\*\*राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करना\*\***
- \* **\*\*आर्थिक विकास को बढ़ावा देना (विदेशी निवेश, व्यापार)\*\***
- \* **\*\*वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका को मजबूत करना\*\***
- \* **\*\*प्रवासियों (NRI) और विदेश में भारतीय मूल के लोगों की रक्षा\*\***
- \* **\*\*सांस्कृतिक और सभ्यतागत कूटनीति का प्रसार\*\***

☐ 3. **\*\*भारत के राजनयिक संबंधों की विशेषताएँ\*\***

☐ **\*\*बहुपक्षीय कूटनीति (Multilateral Diplomacy)\*\***

\* भारत संयुक्त राष्ट्र, WTO, BRICS, G20, SCO, IORA, QUAD जैसे संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाता है।

☐ **\*\*पड़ोसी देशों के साथ संबंध (Neighbourhood First Policy)\*\*** भारत ने श्रीलंका, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को प्राथमिकता दी है।

\* **\*\*Act East Policy\*\***

\* पूर्वोत्तर एशिया (ASEAN देशों) के साथ व्यापार, संपर्क और रणनीतिक साझेदारी बढ़ाने पर जोर।

☐ **\*\*Look West Policy\*\*** खाड़ी देशों और पश्चिम एशिया के साथ ऊर्जा, सुरक्षा और प्रवासी भारतीयों के मुद्दों पर सहयोग।

☐ 4. **\*\*भारत के कुछ प्रमुख राजनयिक प्रयास\*\*\*** **\*\*NAM (गुटनिरपेक्ष आंदोलन)\*\*** की स्थापना में नेतृत्व।

- \* **शांति मिशनों** में भारत की भागीदारी (UN Peacekeeping Forces)।
- \* **2015 पेरिस जलवायु सम्झौते** में सक्रिय भागीदारी।
- \* **अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून)** को UN द्वारा मान्यता दिलवाना।

#### 5. **हाल की प्रमुख कूटनीतिक पहलकदमियाँ (Recent Developments)**

क्षेत्र	पहल या रणनीति
-----	-----
<b>QUAD</b>	अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया के साथ रणनीतिक साझेदारी ।
<b>G20 Presidency (2023)</b>	भारत ने पहली बार G20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की ।
<b>Vaccine Diplomacy (वैक्सीन मैत्री)</b>	COVID-19 के दौरान कई देशों को टीके भेजे ।
<b>Chabahar Port Project (ईरान)</b>	मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक पहुँच बनाने की रणनीति ।
<b>International Solar Alliance (ISA)</b>	अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व ।

**निष्कर्ष (Conclusion)** भारत का राजनय **शांति, संप्रभुता, आपसी सम्मान और वैश्विक सहयोग** के सिद्धांतों पर आधारित रहा है। समय के साथ भारत ने अपनी नीति को **परंपरा और यथार्थवाद (Realism)** का संतुलन बनाते हुए ढाला है। आज भारत एक उभरती हुई **वैश्विक शक्ति** के रूप में न केवल दक्षिण एशिया बल्कि पूरे विश्व में अपनी भूमिका निभा रहा है।

भारतीय राजनय के **साधन (Means/Tools of Indian Diplomacy)** वे माध्यम या उपकरण हैं जिनके ज़रिए भारत अपनी विदेश नीति के उद्देश्यों को पूरा करता है – जैसे राष्ट्रीय हितों की रक्षा, वैश्विक प्रभाव बढ़ाना, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत बनाना।

## ☑☑ **\*\*भारतीय राजनय के प्रमुख साधन (Major Tools of Indian Diplomacy)\*\***

# ☑ 1. **\*\*राजनयिक मिशन (Diplomatic Missions)\*\*** \* भारत के दुनिया भर में **\*\*दूतावास (Embassies)\*\***, **\*\*उच्चायोग (High Commissions)\*\*** और **\*\*वाणिज्य दूतावास (Consulates)\*\*** हैं।

\* ये मिशन दो देशों के बीच संबंधों को बनाए रखने, नागरिक सेवाएँ देने और सहयोग बढ़ाने का काम करते हैं।

2. **\*\*राजनयिक वार्ता और संधियाँ (Diplomatic Dialogue & Treaties)\*\***

\* भारत द्विपक्षीय (Bilateral) और बहुपक्षीय (Multilateral) मंचों पर वार्ता करता है:

**\*\*G20, BRICS, SCO, ASEAN, UN\*\***, आदि में भागीदारी।

\* क्षेत्रीय सहयोग के लिए **\*\*संधियाँ और समझौते\*\*** करता है — जैसे रक्षा, व्यापार, जल संसाधन, ऊर्जा आदि।

☑ 3. **\*\*सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy)\*\*** \* भारतीय संस्कृति, योग, आयुर्वेद, कला, और फिल्म जैसे माध्यमों से विश्व में सॉफ्ट पावर (Soft Power) का प्रसार।

\* **\*\*भारतीय सांस्कृतिक केंद्र (ICCR)\*\*** और **\*\*भारतीय सभ्यता केंद्र\*\*** कई देशों में काम करते हैं। \* **\*\*अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून)\*\*** को वैश्विक पहचान दिलवाना इसका उदाहरण है।

4. **\*\*आर्थिक कूटनीति (Economic Diplomacy)\*\***

\* व्यापार, निवेश, तकनीकी सहयोग, और विकास परियोजनाओं के माध्यम से विदेश नीति को आगे बढ़ाना।

\* भारत द्वारा कई देशों को **\*\*ऋण सहायता\*\***, **\*\*विकास परियोजनाएं\*\***, और **\*\*सॉफ्ट लोन\*\*** देना — जैसे अफ्रीका और पड़ोसी देशों को।

☑ 5. **\*\*रक्षा और रणनीतिक साझेदारी (Defense & Strategic Partnerships)\*\***

\* भारत ने अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान, इजराइल आदि के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाया है। \* रक्षा सौदे (जैसे राफेल), संयुक्त सैन्य अभ्यास (Malabar, Yudh Abhyas), और तकनीकी साझेदारी प्रमुख उदाहरण हैं।

6. **वैश्विक मंचों पर भूमिका (Participation in Global Platforms)** संयुक्त राष्ट्र में सक्रिय भागीदारी, सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता की दावेदारी। **UN Peacekeeping Missions** में भारत की अग्रणी भूमिका।

7. **प्रवासी भारतीय कूटनीति (Diaspora Diplomacy)** \* 3 करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीय (PIOs और NRIs) भारत की वैश्विक शक्ति और छवि को बढ़ाने का माध्यम हैं। **Pravasi Bharatiya Divas**, **OCI कार्ड**, और संकट के समय सहायता (जैसे ऑपरेशन गंगा, वंदे भारत मिशन) इसके उदाहरण हैं।

8. **तकनीकी और डिजिटल कूटनीति (Tech & Digital Diplomacy)** भारत ने डिजिटल सहयोग, साइबर सुरक्षा, फिनटेक, और डिजिटल इंडिया को कूटनीतिक औजार के रूप में प्रस्तुत किया है। **CoWIN प्लेटफॉर्म** और **Digital Public Infrastructure** को दुनिया के साथ साझा करना इसका उदाहरण है।

9. **मानवतावादी सहायता (Humanitarian Aid)** \* संकट में फँसे देशों को खाद्य, दवाइयाँ, टीके और आपदा राहत भेजना: \* COVID-19 में **“वैक्सीन मैत्री”** \* नेपाल भूकंप, श्रीलंका संकट, अफगानिस्तान राहत आदि।

10. **जनसंपर्क और मीडिया (Public Diplomacy & Media)** \* MEA (विदेश मंत्रालय) और भारतीय मिशनों के **सोशल मीडिया चैनल**, वेबसाइट्स, और प्रेस विज्ञप्तियों के माध्यम से विदेश नीति की जानकारी फैलाना।

**निष्कर्ष (Conclusion)** भारतीय राजनय के साधन **कूटनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामरिक और तकनीकी** सभी क्षेत्रों को समेटते हैं। आज का भारत अपने **सॉफ्ट पावर** के साथ-साथ **हार्ड पावर** (रक्षा, अर्थव्यवस्था) को भी संतुलित रूप से उपयोग में ला रहा है।

## Chapter -6

### पुराना तथा नया राजनय

**\*\*पुराने राजनय की विशेषताएँ\*\*** (Characteristics of Traditional/Old Diplomacy) से आशय उन कूटनीतिक गतिविधियों से है जो मुख्यतः **\*\*15वीं से 19वीं शताब्दी\*\*** तक प्रचलित थीं। यह राजनयिक प्रणाली आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विकसित होने से पहले की है और यह आज के **\*\*आधुनिक या सार्वजनिक राजनय (Modern / Public Diplomacy)\*\*** से काफ़ी भिन्न थी।  
पुराने राजनय की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of Traditional Diplomacy)**\*\***

☐ 1. **\*\*गोपनीयता (Secrecy)\*\*** \* पुराने राजनय की सबसे बड़ी विशेषता थी कि यह **\*\*पूरी तरह गुप्त\*\*** होता था।

\* कूटनीतिक वार्ताएँ, समझौते और निर्णय **\*\*जनता या संसद से छिपाकर\*\*** किए जाते थे।

☐ 2. **\*\*राजाओं और शासकों की प्रधानता (Monarch-Centered Diplomacy)\*\***

\* यह कूटनीति मुख्यतः **\*\*राजाओं, सम्राटों और राजशाही तंत्र\*\*** द्वारा नियंत्रित होती थी।

\* विदेश नीति राजा की निजी नीति मानी जाती थी, न कि राज्य की या जनता की।

☐ 3. **\*\*स्थायी राजदूतों की अनुपस्थिति (Lack of Permanent Ambassadors)\*\***

\* प्रारंभिक काल में राजदूत स्थायी नहीं होते थे; उन्हें किसी विशेष कार्य के लिए अस्थायी रूप से भेजा जाता था। \* बाद में (15वीं शताब्दी में इटली और फ्रांस से शुरू होकर) स्थायी दूतावासों की परंपरा शुरू हुई।

☐ 4. **\*\*गुप्त संधियाँ और गठबंधन (Secret Treaties & Alliances)\*\*** \* राष्ट्र एक-दूसरे के साथ **\*\*गुप्त समझौते\*\*** करते थे, जिससे अंतरराष्ट्रीय अविश्वास बढ़ता था। प्रथम विश्व युद्ध के कारणों में इन गुप्त समझौतों की भी भूमिका रही।

5. **\*\*राजनीतिक वर्चस्व और शक्ति-संतुलन की सोच (Power Politics & Balance of Power)** पुराने राजनय में मुख्य उद्देश्य था **\*\*राज्य की शक्ति और प्रभाव को बढ़ाना\*\***, न कि शांति या सहयोग।

\* **\*\*'राज्य हित सर्वोपरि\*\*'** (Reason of State / Raison d'État) की भावना प्रमुख थी।

▣ 6. **\*\*राजनय केवल कुलीन वर्ग के लिए (Elitist in Nature)\*\*** केवल राजनयिक वर्ग, कुलीन वर्ग या उच्च शिक्षित लोग ही इसमें भाग लेते थे। आम जनता की इसमें कोई भूमिका नहीं होती थी।

▣ 7. **\*\*युद्ध और संधियों का साधन (War as Extension of Diplomacy)\*\*** पुराने राजनय में युद्ध को एक **\*\*राजनयिक उपकरण\*\*** माना जाता था – जब वार्ता विफल हो जाए, तब युद्ध।

\* जैसे – मैकियावेली की सोच: “युद्ध और धोखे दोनों राजनीति के स्वाभाविक साधन हैं

8. **\*\*धीमी प्रक्रिया (Slow Communication)\*\*** संदेशवाहकों और घुड़सवारों के माध्यम से संचार होता था, जिससे निर्णय प्रक्रिया धीमी होती थी।

\* कूटनीतिक निर्णय लेने में **\*\*हफ्तों या महीनों\*\*** का समय लगता था।

निष्कर्ष (Conclusion) **\*\*पुराना राजनय \*\*गुप्त, राजा-केंद्रित, युद्धोन्मुख और कुलीन वर्गीय\*\*** था। इसका उद्देश्य शक्ति संतुलन बनाए रखना और राष्ट्रीय स्वार्थों की पूर्ति करना था। लेकिन इसने **\*\*स्थायी दूतावासों\*\***, **\*\*कूटनीतिक मर्यादाओं\*\***, और **\*\*अंतरराष्ट्रीय परंपराओं\*\*** की नींव रखी, जो आगे चलकर आधुनिक राजनय का आधार बनीं।

**\*\*नए राजनय की उत्पत्ति के कारण\*\*** (Causes of the Emergence of New Diplomacy) आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण विषय है। नया राजनय पारंपरिक या पुराने राजनय से **\*\*बहुत अधिक पारदर्शी, लोकतांत्रिक, बहुपक्षीय और जन-आधारित\*\*** है।

▣ **\*\*नए राजनय के उत्पत्ति के प्रमुख कारण\*\*** 1. **\*\*लोकतंत्र और जनमत का उदय (Rise of Democracy and Public Opinion)\*\*** अब विदेश नीति केवल राजा या कुलीनों की नहीं रही, बल्कि **\*\*जनता और संसद की सहभागिता\*\*** भी जरूरी हो गई।

\* **\*\*जनता के चुने हुए प्रतिनिधि\*\*** विदेश नीति पर सवाल उठाने लगे।

\* इससे पारदर्शिता और जवाबदेही की आवश्यकता बढ़ी।

▣ 2. **\*\*प्रथम विश्व युद्ध के दुष्परिणाम (Aftermath of World War I)\*\*** पुराने राजनय की **\*\*गुप्त संधियाँ\*\*** और शक्ति राजनीति को WWI के कारणों में गिना गया। युद्ध के बाद अमेरिकी

राष्ट्रपति **वुडरो विल्सन** ने **“14 सूत्रीय प्रस्ताव”** (Fourteen Points) में **खुले राजनय** (Open Diplomacy) की मांग की।

3. **प्रौद्योगिकी और संचार के साधनों का विकास** (Growth of Technology and Communication) **टेलीग्राफ, रेडियो, इंटरनेट और सोशल मीडिया के आने से राजनयिक निर्णय तेज़ और सार्वजनिक होने लगे।**

\* आज नेता सीधे जनता को संबोधित करते हैं (जैसे ट्वीट या टीवी के माध्यम से)।

4. **संयुक्त राष्ट्र और बहुपक्षीय संस्थाओं का निर्माण** (Creation of UN and Multilateral Institutions) **UN, WTO, WHO, IMF जैसे संगठनों में सभी देशों की भागीदारी होती है।**

\* यहां वार्ताएँ खुली और साझा होती हैं, जिससे नया राजनय बढ़ा।

5. **अंतरराष्ट्रीय मुद्दों की प्रकृति में बदलाव** (Changing Nature of Global Issues)

जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, महामारी, साइबर सुरक्षा जैसे मुद्दे **सीमा-रहित** हैं। इनका समाधान **बहुपक्षीय और सहयोगात्मक** कूटनीति से ही संभव है।

6. **मानवाधिकार और वैश्विक नैतिकता का उदय** (Human Rights and Global Ethics) अब केवल राज्यहित नहीं, बल्कि **मानवाधिकार, लोकतंत्र, पर्यावरण** जैसे मूल्यों की भी चर्चा होती है। \* कई देश अब **“नैतिक कूटनीति”** (Moral Diplomacy) की ओर बढ़ रहे हैं।

7. **गुटनिरपेक्ष आंदोलन और औपनिवेशिक देशों का स्वतंत्र होना** 1947 के बाद जैसे-जैसे नए स्वतंत्र देश बने, उन्होंने **नई कूटनीति** को अपनाया जो शक्ति नहीं, **शांति और विकास** पर आधारित थी। \* भारत, मिस्र, यूगोस्लाविया जैसे देशों ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन शुरू किया।

8. **ग्लोबल मीडिया और पारदर्शिता** (Global Media and Transparency) अब हर कूटनीतिक घटना को **मीडिया तुरंत दिखाता** है। \* इससे सरकारों पर **ज़िम्मेदार और खुले ढंग से संवाद** करने का दबाव होता है।

9. **ग्लोबल इंटरडिपेंडेंस** (Global Interdependence) अब देश एक-दूसरे पर आर्थिक,

पर्यावरणीय और तकनीकी रूप से निर्भर हैं। \* इससे राजनय अधिक \*\*सहयोगात्मक और व्यावहारिक\*\* बन गया है।

\*निष्कर्ष (Conclusion)\*\*नए राजनय की उत्पत्ति केवल तकनीकी या राजनीतिक बदलावों के कारण नहीं हुई, बल्कि यह \*\*समाज, अर्थव्यवस्था, विचारधारा, और वैश्विक मूल्यों\*\* के व्यापक परिवर्तन का परिणाम है। आज का राजनय \*\*खुला, तेज़, जनमुखी और नैतिक ज़िम्मेदारी\*\* से जुड़ा हुआ है।

**नये राजनय की विशेषताएँ** (Characteristics of New Diplomacy) आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। नया राजनय 20वीं सदी के मध्य से विकसित हुआ, विशेषकर \*\*प्रथम विश्व युद्ध\*\*, \*\*लोकतंत्र के उदय\*\*, और \*\*संयुक्त राष्ट्र की स्थापना\*\* के बाद। यह \*\*पारदर्शिता, बहुपक्षीयता, जनता की भागीदारी और वैश्विक नैतिकता\*\* जैसे मूल्यों पर आधारित होता है।

**\*नये राजनय की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of New Diplomacy)\*\***

1. **पारदर्शिता (Transparency)** पुराने राजनय में निर्णय गुप्त होते थे, लेकिन नए राजनय में \*\*खुलापन और पारदर्शिता\*\* होती है। \* संसद, मीडिया और जनता के सामने कूटनीतिक समझौते लाए जाते हैं।

2. **जनता की भागीदारी (People's Participation)** विदेश नीति अब केवल सरकार या राजा तक सीमित नहीं है। \* \*\*जनमत\*\*, \*\*लोकतंत्र\*\*, और \*\*सिविल सोसाइटी\*\* की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है।

3. **बहुपक्षीयता (Multilateralism)** नए राजनय में कई देश और संस्थाएं मिलकर निर्णय लेते हैं — जैसे: \* \*\*संयुक्त राष्ट्र (UN\* \*\*G20\*\*, \*\*WTO\*\*, \*\*BRICS\*\*, \*\*WHO\*\*, आदि। \* यह \*\*साझा समाधान और वैश्विक सहमति\*\* को महत्व देता है।

4. **तेज़ और तकनीकी रूप से सक्षम (Fast & Tech-Driven)** संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के कारण कूटनीतिक संवाद अब \*\*त्वरित और डिजिटल\*\* हो गए हैं।

\* ई-कूटनीति (E-Diplomacy) और साइबर कूटनीति का उदय ह ७

5. **सॉफ्ट पावर का उपयोग (Use of Soft Power)** सैन्य शक्ति से अधिक अब **संस्कृति, शिक्षा, योग, साहित्य, मीडिया** जैसे माध्यमों का प्रभाव बढ़ा है। भारत इसका उदाहरण है – **योग, आयुर्वेद, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सांस्कृतिक प्रभाव**।

6. **मानवाधिकार और नैतिक मूल्य (Human Rights & Ethical Values)** विदेश नीति में अब केवल शक्ति नहीं, बल्कि **नैतिकता, लोकतंत्र, और मानवाधिकारों** का भी स्थान है।

\* जैसे – आप्रवासी नीति, महिला अधिकार, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा।

7. **वैश्विक मुद्दों पर सहयोग (Global Cooperation on Common Issues)** जैसे – जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, महामारी, साइबर सुरक्षा आदि। इन पर एक देश अकेला समाधान नहीं निकाल सकता, इसलिए **साझा प्रयासों की आवश्यकता** है।

8. **गैर-राजकीय अभिनेताओं की भूमिका (Role of Non-State Actors)** अब केवल सरकारें ही नहीं, बल्कि **NGOs, अंतरराष्ट्रीय संगठन (UN, IMF), बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, मीडिया और सोशल मीडिया** भी राजनय को प्रभावित करते हैं।

9. **जनसंपर्क और मीडिया का प्रभाव (Public Diplomacy & Media Influence)** सरकारें अब **सीधे जनता से संवाद** करती हैं (जैसे सोशल मीडिया पर नेता/विदेश मंत्री के बयान)। **मीडिया राजनय को पारदर्शी और जवाबदेह बनाता है।**

10. **शांति और विकास केंद्रित (Focus on Peace and Development)** नया राजनय केवल शक्ति संतुलन या युद्ध रोकने तक सीमित नहीं है। यह **सतत विकास, गरीबी हटाने, और मानव कल्याण** पर ज़ोर देता है। **निष्कर्ष (Conclusion)** नया राजनय आधुनिक वैश्विक व्यवस्था की माँगों और चुनौतियों के अनुरूप विकसित हुआ है। यह पारदर्शी, लोकतांत्रिक, तकनीकी-सक्षम और बहुपक्षीय है, जो वैश्विक शांति, सहयोग और मानव कल्याण को प्राथमिकता देता है। **पुराने तथा नये राजनय में अंतर (Difference between Old and New Diplomacy)** अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। ये दोनों राजनय अलग-अलग ऐतिहासिक परिस्थितियों, मूल्यों, साधनों और उद्देश्यों पर आधारित हैं।

**पुराने और नए राजनय में मुख्य अंतर:**

<b>**बिंदु**</b>	<b>**पुराना राजनय**</b>	
<b>**नया राजनय**</b>		
-----	-----	-----
-----		
<b>**1. प्रकृति (Nature)**</b>	गुप्त, बंद दरवाजों के पीछे	
पारदर्शी, खुला और जवाबदेह		
<b>**2. नियंत्रक शक्ति**</b>	राजा, सम्राट या कुलीन वर्ग	
लोकतांत्रिक सरकारें और जनता		
<b>**3. उद्देश्य**</b>	शक्ति संतुलन, विजय, राष्ट्रीय स्वार्थ	
सहयोग, शांति, मानव कल्याण		
<b>**4. प्रक्रिया**</b>	सीमित लोग शामिल, केवल राजनयिक	
बहुपक्षीय, जनता, मीडिया, NGO आदि शामिल		
<b>**5. माध्यम (Means)**</b>	गुप्त संधियाँ, युद्ध की धमकी	
वार्ता, समझौते, संयुक्त मंचों पर चर्चा		
<b>**6. संस्थाएँ (Institutions)**</b>	सीमित संख्या में राज्य, कोई अंतरराष्ट्रीय संस्था नहीं	संयुक्त राष्ट्र, G20, WTO, WHO जैसे मंचों की भूमिका
<b>**7. सूचना व संचार**</b>	धीमा (घोड़े, पत्रवाहक)	
तेज़ (इंटरनेट, डिजिटल कूटनीति)		
<b>**8. सार्वजनिक भागीदारी**</b>	जनता की कोई भूमिका नहीं	
संसद, मीडिया और जनमत का महत्व		
<b>**9. मुद्दों की प्रकृति**</b>	सीमित – सीमा विवाद, सैन्य गठबंधन	
व्यापक – जलवायु, मानवाधिकार, वैश्विक व्यापार		

## Chapter -7

### गुप्त तथा खुला राजनय

**\*\*"गुप्त तथा मुक्त राजनय की चर्चा"\*** करना अंतरराष्ट्रीय राजनीति और कूटनीति के अध्ययन में आवश्यक है, क्योंकि ये दोनों कूटनीति के दो **\*\*विपरीत रूप\*\*** हैं।

आइए विस्तार से समझते हैं:

☐ **\*\*गुप्त राजनय (Secret Diplomacy)\*\***

☐ **\*\*परिभाषा:\*** जब दो या अधिक देशों के बीच कूटनीतिक वार्ताएँ, समझौते और संधियाँ **\*\*गुप्त रूप से, जनता और संसद से छिपाकर\*\*** की जाती हैं, तो उसे **\*\*गुप्त राजनय\*\*** कहते हैं।

☐ **\*\*मुख्य विशेषताएँ:\*** 1. **\*\*गोपनीयता:\*** बातचीत बंद कमरों में होती थी, जनता को कोई जानकारी नहीं दी जाती थी।

2. **\*\*राजा या कुलीनों का नियंत्रण:\*** यह केवल शासक वर्ग के लिए सीमित था।

3. **\*\*गुप्त संधियाँ:\*** कई बार राष्ट्र आपसी समझौते जनता को बताए बिना करते थे।

4. **\*\*विश्वास की कमी:\*** अन्य राष्ट्रों के साथ अविश्वास और संदेह की भावना बनी रहती थी।

5. **\*\*युद्ध का कारण:\*** गुप्त राजनय से कई बार युद्ध के हालात बनते थे।

\* उदाहरण: **\*\*प्रथम विश्व युद्ध\*\*** के पीछे कई गुप्त संधियाँ कारण बनीं।

**\*\*उदाहरण:\*** \* 19वीं शताब्दी और प्रथम विश्व युद्ध से पहले की अधिकांश संधियाँ। **\*\*Sykes-Picot Agreement (1916)\*\*** — ब्रिटेन और फ्रांस के बीच, पश्चिम एशिया के बंटवारे के लिए, जो जनता को नहीं बताया गया।

☐ **\*\*मुक्त राजनय (Open Diplomacy)\*\*** ☐ **\*\*परिभाषा:\*** जब कूटनीतिक वार्ताएँ और समझौते **\*\*जनता, संसद और मीडिया के सामने पारदर्शिता से\*\*** किए जाते हैं, तो उसे **\*\*मुक्त राजनय\*\*** कहते हैं।

☐ **मुख्य विशेषताएँ:** 1. **पारदर्शिता (Transparency):** निर्णयों की जानकारी संसद और मीडिया को दी जाती है।

2. **जनता की भागीदारी:** जनमत और लोकतांत्रिक संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

3. **विश्वास और सहयोग:** देशों के बीच आपसी विश्वास और सहयोग को बढ़ावा मिलता है।

4. **बहुपक्षीय वार्ता:** कई देशों के साथ एक मंच पर खुले संवाद।

5. **नैतिक कूटनीति:** अंतरराष्ट्रीय संबंधों में **मानवाधिकार, शांति और न्याय** को महत्व।

**उद्भव (Origin):**

**वुडरो विल्सन (Woodrow Wilson)**, अमेरिकी राष्ट्रपति, ने **1918** में अपने **"14 सूत्रीय प्रस्ताव"** में "Open Diplomacy" की आवश्यकता पर जोर दिया।

**उदाहरण:** **संयुक्त राष्ट्र** में होने वाली खुली बहसें **G20** या **WTO** जैसी संस्थाओं में **पारदर्शी प्रक्रिया** **भारत की विदेश नीति** में संसद और मीडिया की भूमिका

**गुप्त और मुक्त राजनय में अंतर**

बिंदु	गुप्त राजनय	मुक्त राजनय
-----	-----	-----
<b>प्रकृति</b>	गोपनीय और सीमित	पारदर्शी और
सार्वजनिक		
<b>नियंत्रण</b>	राजा या कुलीन वर्ग	लोकतांत्रिक सरकारें
<b>जनता की भागीदारी</b>	नहीं होती	सक्रिय होती है
<b>संधियाँ</b>	गुप्त और अचानक लागू	खुले रूप से संसद में
पारित	<b>विश्वास स्तर</b>	कम, संदेहपूर्ण
सहयोगपूर्ण		अधिक,

## chapter- 8

### राजनयिक अभिकर्ता के प्रकार एवं कार्य

**\*\*आदर्श राजनय (Ideal Diplomacy)\*\*** का अर्थ है ऐसा कूटनीतिक व्यवहार या नीति जो नैतिकता, पारदर्शिता, आपसी सम्मान और वैश्विक शांति को प्राथमिकता देता हो। यह केवल राष्ट्रहित तक सीमित न होकर, समग्र मानवता के कल्याण की ओर उन्मुख होता है।

▣ आदर्श राजनय के मुख्य कार्य (मुख्य बिंदु सहित):

1. **\*\*अंतरराष्ट्रीय शांति और सौहार्द बनाए रखना\*\*** \* युद्ध और संघर्ष से बचाव करना  
\* संवाद और समझौते के माध्यम से समस्याओं का समाधान निकालना
2. **\*\*देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना\*\*** \* आपसी विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देना \* सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहन देना
3. **\*\*राष्ट्र की छवि का निर्माण और संरक्षण करना\*\*** \* देश की नीतियों, संस्कृति और मूल्यों को विदेशों में सकारात्मक रूप से प्रस्तुत करना
4. **\*\*अंतरराष्ट्रीय समझौतों और संधियों में भागीदारी करना\*\*** \* न्यायसंगत, पारदर्शी और टिकाऊ समझौते करना \* अंतरराष्ट्रीय नियमों का पालन करना
5. **\*\*समस्याओं को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाना\*\*** \* युद्ध या टकराव के बजाय वार्ता और मध्यस्थता द्वारा समाधान निकालना
6. **\*\*वैश्विक समस्याओं पर सहयोग करना\*\*** \* जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, महामारी आदि वैश्विक मुद्दों पर मिलकर कार्य करना
7. **\*\*नैतिकता और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना\*\*** \* मानवाधिकारों, लोकतंत्र और समानता के सिद्धांतों की रक्षा करना ▣ **निष्कर्ष:** **\*\*आदर्श राजनय\*\*** केवल राजनीतिक या आर्थिक लाभ का साधन नहीं होता, बल्कि यह एक ऐसा माध्यम है जो वैश्विक समाज को एकजुट रखने, शांति स्थापित करने और सभी के समुचित विकास में सहायक होता है।

**\*\*राजनयिक प्रतिनिधियों (Diplomatic Representatives)\*\* के कार्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। ये प्रतिनिधि अपने देश का विदेशों में प्रतिनिधित्व करते हैं और दोनों देशों के बीच मैत्री, सहयोग और समझ को बढ़ावा देते हैं।**

☐ **\*\*राजनयिक प्रतिनिधियों के प्रमुख कार्य:\*\***

1. **\*\*अपने देश का प्रतिनिधित्व करना\*\*** विदेश में अपने देश की सरकार, नीतियों, संस्कृति और विचारधारा को प्रस्तुत करना।

\* राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या अन्य उच्च अधिकारियों की ओर से आधिकारिक प्रतिनिधित्व करना।

2. **\*\*राजनीतिक रिपोर्टिंग और सूचना एकत्र करना\*\*** उस देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सैन्य गतिविधियों की जानकारी एकत्र करना। अपने देश की सरकार को नियमित रूप से रिपोर्ट भेजना।

3. **\*\*द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करना\*\*** दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ाना।

\* आपसी सहयोग के नए क्षेत्रों की पहचान करना (जैसे: व्यापार, शिक्षा, संस्कृति, रक्षा आदि)।

4. **\*\*राजनीतिक और आर्थिक वार्ताओं में भाग लेना\*\*** \* संधियाँ, समझौते और व्यापारिक अनुबंधों पर बातचीत करना। \* अपने देश के हितों की रक्षा करते हुए समझौतों में भागीदारी करना।

5. **\*\*सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना\*\*** \* सांस्कृतिक कार्यक्रमों, छात्रवृत्तियों, प्रदर्शनियों आदि के माध्यम से देशों के बीच सांस्कृतिक समझ को गहरा करना।

6. **\*\*कांसुलर सेवाएँ प्रदान करना\*\*** अपने देश के नागरिकों को विदेश में सहायता प्रदान करना (जैसे: पासपोर्ट, वीजा, आपातकालीन मदद)। \* विदेश में अपने देश के प्रवासियों और छात्रों के अधिकारों की रक्षा करना।

7. **\*\*संघर्ष समाधान और मध्यस्थता\*\*** \* यदि दोनों देशों के बीच कोई विवाद या तनाव उत्पन्न हो, तो शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में कार्य करना। \* वार्ता और समझौते के माध्यम से विवाद सुलझाने का प्रयास करना।

## Chapter-9

### राजनयिक उन्मुक्तियाँ एवं विशेषाधिकार

#### \*\*राजनयिक उन्मुक्तियों के आधार (Basis of Diplomatic Immunities)\*\*

राजनयिक उन्मुक्तियाँ (Diplomatic Immunities) वे विशेष अधिकार और संरक्षण हैं जो एक देश द्वारा दूसरे देश के राजनयिक प्रतिनिधियों को प्रदान किए जाते हैं। इनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राजनयिक अपने कर्तव्यों का निर्वहन स्वतंत्र रूप से और बिना किसी भय, हस्तक्षेप या दबाव के कर सकें।

#### ☐ \*\*राजनयिक उन्मुक्तियों के प्रमुख आधार:\*\*

1. \*\*अंतरराष्ट्रीय परंपरा और प्रथा (International Custom and Tradition)\*\*
2. प्राचीन काल से ही, जब एक राजा अपने दूत को दूसरे राज्य में भेजता था, तो उसे सुरक्षा और सम्मान दिया जाता था।

\* यह परंपरा आधुनिक राजनयिक उन्मुक्तियों का आधार बनी।

2. \*\*वियना संधि (Vienna Convention on Diplomatic Relations, 1961)\*\*

\* यह संधि राजनयिक उन्मुक्तियों की सबसे प्रमुख और विधिसम्मत अंतरराष्ट्रीय संधि है।

\* इसमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि राजनयिकों को किन-किन मामलों में छूट प्राप्त है, जैसे: गिरफ्तारी से छूट\* करों से छूट \* आवास की सुरक्षा \* निजी संवाद की गोपनीयता आदि

3. \*\*आपसी पारस्परिकता का सिद्धांत (Principle of Reciprocity)\*\*

यह सिद्धांत कहता है कि यदि एक देश अपने राजनयिकों को किसी अन्य देश में उन्मुक्तियाँ चाहता है, तो उसे भी उस देश के राजनयिकों को अपने यहाँ वैसी ही छूट देनी होगी।

\* इससे संतुलन बना रहता है।

#### 4. **\*\*राजनयिक कार्यों की स्वतंत्रता (Freedom of Diplomatic Functions)\*\***

\* राजनयिकों को उनकी जिम्मेदारियाँ निभाने में कोई बाधा न हो, इसीलिए उन्हें कानूनी कार्रवाई, गिरफ्तारी या दबाव से मुक्त रखा जाता है।

\* इससे वे स्वतंत्र रूप से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकते हैं।

#### 5. **\*\*राजनयिक मिशन की गरिमा और प्रतिष्ठा की रक्षा (Protection of Dignity of Diplomatic Missions)\*\***

\* राजनयिकों और उनके आवासों का सम्मान बनाए रखने के लिए उन्मुक्तियाँ आवश्यक मानी जाती हैं।

\* इससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सौहार्द बना रहता है।

#### 6. **\*\*राजनयिक सुरक्षा का सिद्धांत (Theory of Functional Necessity)\*\***

\* यह सिद्धांत कहता है कि राजनयिक उन्मुक्तियाँ **\*\*व्यक्तिगत लाभ\*\*** के लिए नहीं, बल्कि केवल **\*\*राजनयिक कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए\*\*** दी जाती हैं।

☐ निष्कर्ष:**\*\*राजनयिक उन्मुक्तियाँ\*\*** अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सफल संचालन के लिए अत्यावश्यक हैं। ये न केवल राजनयिकों की सुरक्षा और स्वतंत्रता सुनिश्चित करती हैं, बल्कि देशों के बीच संवाद, समझ और सहयोग को भी मजबूती प्रदान करती हैं।

**\*\*राजनयिक अभिकर्ताओं की उन्मुक्तियाँ एवं विशेषाधिकार\*\*** (Diplomatic Agents' Immunities and Privileges) अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। इनका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राजनयिक अपने कर्तव्यों का पालन स्वतंत्र, निष्पक्ष और बिना किसी डर या बाधा के कर सकें।

#### ☐ **\*\*राजनयिक अभिकर्ताओं की उन्मुक्तियाँ एवं विशेषाधिकार:\*\***

##### 1. **\*\*निजी तथा कार्यालयीय प्रतिरक्षा (Personal and Official Immunity):\*\***

राजनयिक को **\*\*गिरफ्तार या बंदी नहीं\*\*** बनाया जा सकता। \* उसे **\*\*फौजदारी मामलों में पूर्ण प्रतिरक्षा\*\*** प्राप्त होती है।

\* दीवानी मामलों में भी प्रतिरक्षा होती है, जब तक वह उसका व्यक्तिगत व्यापार न हो।

2. **\*\*न्यायिक प्रक्रिया से छूट (Immunity from Jurisdiction):\*\*** राजनयिक को मेज़बान देश की अदालतों में सामान्यतः अभियुक्त नहीं बनाया जा सकता।

\* वह उस देश के **\*\*कानूनी दायरे से बाहर\*\*** होता है।

3. **\*\*करों और शुल्कों से छूट (Exemption from Taxes and Duties):\*\*** राजनयिकों को **\*\*आयकर, संपत्ति कर, बिक्री कर\*\*** आदि से छूट होती है।

\* उनके व्यक्तिगत सामान पर भी **\*\*कस्टम ड्यूटी नहीं लगती।\*\***

4. **\*\*राजनयिक परिसर की सुरक्षा (Inviolability of Diplomatic Premises):\*\*** दूतावास या राजनयिक निवास में **\*\*मेज़बान देश की पुलिस या सेना\*\*** प्रवेश नहीं कर सकती।

\* बिना अनुमति के तलाशी, जब्ती या घुसपैठ निषिद्ध है।

5. **\*\*राजनयिक अभिलेखों और पत्र-व्यवहार की गोपनीयता (Confidentiality of Documents and Communication):\*\*** उनके पत्राचार (correspondence) और दस्तावेजों को पूर्ण गोपनीयता प्राप्त होती है। उन्हें रोका या खोला नहीं जा सकता।

6. **\*\*यात्रा की स्वतंत्रता (Freedom of Movement):\*\*** राजनयिक को पूरे देश में **\*\*स्वतंत्र रूप से घूमने\*\*** की अनुमति होती है, जब तक राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न न हो।

7. **\*\*दूत सामान की छूट (Exemption of Diplomatic Bag):\*\*** **\*\*Diplomatic bag\*\*** (राजनयिक थैला) को खोला या एक्स-रे नहीं किया जा सकता।

\* इसमें राजनयिक दस्तावेज व सामग्री भेजी जाती है।

8. **\*\*परिवार के सदस्यों को भी उन्मुक्ति (Privileges to Family Members):\*\***

राजनयिक के साथ रहने वाले **\*\*पत्नी/पति और बच्चों\*\*** को भी अधिकांश उन्मुक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

9. **\*\*सामानिक आयात-निर्यात की छूट (Duty-Free Imports/Exports):\*\***

\* राजनयिक अपने व्यक्तिगत उपयोग के सामान को बिना टैक्स या शुल्क के ला सकते हैं।

**\*\*सीमाएँ (Limitations):\*\***

राजनयिक उन्मुक्तियाँ **\*\*व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं\*\***, बल्कि **\*\*राजनयिक कार्यों के लिए\*\*** होती हैं।

\* यदि कोई राजनयिक गंभीर अपराध करता है, तो उसे **\*\*"persona non grata"\*** घोषित कर देश से निष्कासित किया जा सकता है।

☞ **\*\*अंतरराष्ट्रीय आधार:\*\***

इन सभी उन्मुक्तियों और विशेषाधिकारों का कानूनी आधार है:

**\*\*वियना संधि, 1961 (Vienna Convention on Diplomatic Relations, 1961)\*\***

**\*\*निष्कर्ष:\*\*** राजनयिक उन्मुक्तियाँ एवं विशेषाधिकार किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं, बल्कि **\*\*राष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप में\*\*** उसके कर्तव्यों को निर्भय, निष्पक्ष और कुशलतापूर्वक निभाने के लिए दिए जाते हैं। ये उन्मुक्तियाँ अंतरराष्ट्रीय सौहार्द और सहयोग को बनाए रखने में एक **\*\*सुदृढ़ कूटनीतिक ढांचा\*\*** प्रदान करती हैं।

**\*\*राजनयिक मिशन का समापन\*\*** (Termination of Diplomatic Mission) का अर्थ है किसी देश में कार्यरत किसी अन्य देश के राजनयिक मिशन (जैसे दूतावास या उच्चायोग) की गतिविधियों को समाप्त करना। यह प्रक्रिया **\*\*वियना संधि 1961 (Vienna Convention on Diplomatic Relations)\*\*** में निर्धारित नियमों के अंतर्गत होती है।

☞ **\*\*राजनयिक मिशन के समापन के मुख्य कारण:\*\*** 1. **\*\*राजनयिक संबंधों का टूटना (Break in Diplomatic Relations)\*\***

\* जब दो देशों के बीच **\*\*राजनयिक संबंध समाप्त हो जाते हैं\*\***, तो राजनयिक मिशन भी बंद हो जाता है।

\* यह अक्सर युद्ध, राजनीतिक मतभेद या टकराव के कारण होता है।

2. **\*\*मिशन की समाप्ति की घोषणा (Official Closure by Sending State)\*\***

\* जब कोई देश स्वेच्छा से अपने मिशन को **\*\*बंद करने का निर्णय\*\*** लेता है, चाहे वह आर्थिक कारण हो या नीति में परिवर्तन।

3. **\*\*राजनयिक को "Persona Non Grata" घोषित करना\*\*** \* जब मेज़बान देश किसी राजनयिक को **\*\*"अवांछनीय व्यक्ति" (persona non grata)\*\*** घोषित कर देता है।

\* इससे उस व्यक्ति को देश छोड़ना पड़ता है और कभी-कभी पूरा मिशन भी प्रभावित हो सकता है।

4. **\*\*युद्ध या संकट की स्थिति (War or Emergency Situations)\*\*** युद्ध, गृहयुद्ध, तख्तापलट या किसी गंभीर संकट के दौरान मिशन को सुरक्षा कारणों से बंद किया जा सकता है।

5. **\*\*राजनयिक मिशन के प्रमुख की मृत्यु या वापसी (Death or Recall of Head of Mission)\*\*** जब राजदूत या उच्चायुक्त की मृत्यु हो जाती है या उसे वापस बुला लिया जाता है, और कोई उत्तराधिकारी नहीं भेजा जाता।

6. **\*\*मेज़बान देश द्वारा मिशन की समाप्ति (Termination by Receiving State)\*\*** यदि मिशन या उसके सदस्य **\*\*स्थानीय कानूनों का उल्लंघन\*\*** करें, तो मेज़बान देश मिशन को बंद करने का आदेश दे सकता है। **\*\*समापन के बाद की प्रक्रिया:\*\*** 1. **\*\*राजनयिकों और उनके परिवार की सुरक्षित वापसी।\*\***

2. **\*\*दूतावास की संपत्ति, अभिलेख और भवन की सुरक्षा\*\*** के लिए किसी तीसरे देश को उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है।

3. **\*\*राजनयिक उन्मुक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं\*\*** (परंतु कुछ मामलों में व्यक्तिगत सुरक्षा बनी रह सकती है)।

4. **\*\*राजनयिक सम्पत्ति की वापसी\*\*** सुनिश्चित की जाती है।

☞ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*राजनयिक मिशन का समापन\*\*** एक संवेदनशील प्रक्रिया होती है, जो दो देशों के आपसी संबंधों में परिवर्तन को दर्शाती है।

## Chapter -10

### अग्रत्व का नियम ,प्रत्यय पत्र और पूर्ण शक्ति

**\*\*राजनयिक निकाय (Diplomatic Bodies)\*\*** वे संस्थाएँ या संगठन होते हैं जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को सुव्यवस्थित करने, देशों के बीच संवाद स्थापित करने, और शांतिपूर्ण सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्य करते हैं। यह निकाय विभिन्न रूपों में हो सकते हैं, जैसे कि:

**\*1. द्विपक्षीय राजनयिक निकाय (Bilateral Diplomatic Bodies):\*\***

दो देशों के बीच सीधे संपर्क और संबंधों को बनाए रखने के लिए बनाए गए निकाय।

**\*\*उदाहरण:\*\*** भारत में अमेरिकी दूतावास (U.S. Embassy in India)

\* चीन में भारतीय दूतावास (Embassy of India in China)

☐ **\*\*2. बहुपक्षीय राजनयिक निकाय (Multilateral Diplomatic Bodies):\*\***

एक से अधिक देशों के साथ संवाद और सहयोग के लिए बनाए गए संगठन या मंच।

**\*\*उदाहरण:\*\*** \*संयुक्त राष्ट्र (United Nations - UN)\* \*G20, G7, BRICS\* \*विश्व व्यापार संगठन (WTO)\* \*आसियान (ASEAN)\* \*यूरोपीय संघ (EU)\*

**\*\*3. क्षेत्रीय राजनयिक निकाय (Regional Diplomatic Bodies):\*\*** विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों के देशों के बीच सहयोग के लिए बने संगठन।

**\*\*उदाहरण:\*\*** \*दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (SAARC)\* \*अफ्रीकी संघ (African Union)\* \*अरब लीग (Arab League)\*

**\*\*4. विशेष राजनयिक मिशन और दूतावास \* दूतावास (Embassy):** किसी देश की राजधानी में स्थित होता है और पूर्ण राजनयिक प्रतिनिधित्व करता है।

\* वाणिज्य दूतावास (Consulate): किसी देश के अन्य प्रमुख शहरों में होते हैं और वीजा, पासपोर्ट, और नागरिक सहायता जैसे काम करते हैं।

\* स्थायी मिशन (Permanent Mission): संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों में देशों का स्थायी प्रतिनिधित्व।

**\*\*राजनयिक निकायों के कार्य:\*\*** \* शांति बनाए रखना \* अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना \* समझौतों और संधियों पर वार्ता करना \* नागरिकों की रक्षा करना (विदेश में) \* व्यापार, संस्कृति, और शिक्षा को प्रोत्साहित करना

**\*\*"राजदूत का प्रत्यक्षीकरण"\*\*:** एक औपचारिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत किसी देश में नियुक्त नया राजदूत उस देश के राष्ट्राध्यक्ष (जैसे राष्ट्रपति) को अपने नियुक्ति पत्र (Letter of Credence) प्रस्तुत करता है। यह प्रक्रिया उस समय होती है जब कोई राजदूत अपने कार्यभार को आधिकारिक रूप से ग्रहण करता है।

प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया:

1. **\*\*राजदूत का आगमन\*\***: जब किसी देश में नया राजदूत आता है, तो वह अस्थायी रूप से "राजदूत-नामित" (Ambassador-designate) कहलाता है।
2. **\*\*शिष्टाचार भेंट (Courtesy Call)\*\***: वह विदेश मंत्रालय से मिलते हैं और अपनी उपस्थिति की सूचना देते हैं।
3. **\*\*प्रस्तुति पत्र देना (Presentation of Credentials)\*\***: \* राजदूत राष्ट्रपति (या राष्ट्राध्यक्ष) को अपना **\*\*अधिपत्र (Credentials)\*\*** प्रस्तुत करता है।

\* यह एक औपचारिक समारोह होता है, अक्सर पारंपरिक परिधान में और सम्मान के साथ आयोजित किया जाता है।

\* राष्ट्रपति इस पत्र को स्वीकार करके राजदूत को उस देश में आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में मान्यता प्रदान करते हैं।

4. **\*\*कार्यभार ग्रहण\*\***: प्रत्यक्षीकरण के बाद, राजदूत औपचारिक रूप से अपने दायित्वों का निर्वहन शुरू करता है — जैसे कि कूटनीतिक वार्ताएं, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, वाणिज्यिक सहयोग, आदि। इसका महत्व: \* यह **\*\*राजनयिक मान्यता\*\*** (Diplomatic Recognition) की प्रक्रिया का हिस्सा है। \* इससे यह सुनिश्चित होता है कि राजदूत को मेज़बान देश में सभी राजनयिक

विशेषाधिकार प्राप्त हैं। \* यह एक \*\*राजनयिक शिष्टाचार\*\* और अंतरराष्ट्रीय प्रोटोकॉल की आवश्यकता है।

\*\*"पूर्व स्वीकृति"\*\* (अंग्रेज़ी में: \*\*Agrément\*\*) एक राजनयिक शब्द है, जिसका उपयोग तब किया जाता है जब एक देश किसी अन्य देश में राजदूत नियुक्त करने से पहले उस देश की \*\*अनौपचारिक सहमति\*\* (informal approval) प्राप्त करता है।

❑ पूर्व स्वीकृति क्या है? जब कोई देश (जैसे भारत) किसी अन्य देश (जैसे फ्रांस) में \*\*नया राजदूत\*\* भेजना चाहता है, तो वह पहले फ्रांस से \*\*"पूर्व स्वीकृति" (agrément)\*\* माँगता है — यानी, क्या आप इस व्यक्ति को अपने देश में भारत का राजदूत स्वीकार करेंगे?

❑ प्रक्रिया कैसे होती है?

1. \*\*गुप्त रूप से प्रस्ताव\*\* : भारत, फ्रांस की सरकार को गोपनीय रूप से एक व्यक्ति का नाम भेजता है जिसे वह राजदूत बनाना चाहता है।

2. \*\*जाँच और विचार\*\* : फ्रांस की सरकार उस व्यक्ति की पृष्ठभूमि की जाँच करती है (जैसे – नैतिकता, योग्यता, राजनीतिक पृष्ठभूमि, आदि)।

3. \*\*स्वीकृति या अस्वीकृति\*\* : \* यदि वह व्यक्ति उपयुक्त पाया गया, तो \*\*agrément\*\* दे दिया जाता है।

\* यदि वह व्यक्ति अनुपयुक्त हो, तो \*\*agrément अस्वीकार\*\* भी किया जा सकता है (हालांकि यह आमतौर पर बिना सार्वजनिक कारण बताए किया जाता है)।

❑ महत्व: \* यह एक \*\*राजनयिक शिष्टाचार\*\* है और \*\*वियना संधि (Vienna Convention on Diplomatic Relations, 1961)\*\* के अंतर्गत आता है।

\* इससे यह सुनिश्चित होता है कि \*\*मेज़बान देश को आपत्ति न हो\*\* उस राजदूत पर जो वहाँ भेजा जा रहा है।

**\*\*"प्रत्यय पत्र" (Credentials Letter)\*\* और **\*\*"पूर्ण शक्ति पत्र" (Full Powers / पूर्णाधिकार पत्र)\*\*** दोनों ही **\*\*राजनयिक कार्यों\*\*** से जुड़े महत्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं, लेकिन इनका उद्देश्य और उपयोग अलग-अलग होता है।**

☐ परिभाषा: **\*\*प्रत्यय पत्र\*\*** वह औपचारिक पत्र होता है जो एक देश के राष्ट्राध्यक्ष द्वारा किसी राजदूत को दिया जाता है, जिसमें यह प्रमाणित किया जाता है कि वह व्यक्ति उस देश का **\*\*अधिकारिक प्रतिनिधि\*\*** (राजदूत) है।

☐ उपयोग: जब कोई नया **\*\*राजदूत\*\*** किसी अन्य देश में नियुक्त होता है, तो वह अपने प्रत्यय पत्र को उस देश के **\*\*राष्ट्राध्यक्ष\*\*** को प्रस्तुत करता है।

\* इसी प्रक्रिया को **\*\*राजदूत का प्रत्यक्षीकरण\*\*** कहा जाता है।

☐ महत्व: प्रत्यय पत्र प्रस्तुत करने के बाद ही राजदूत को **\*\*औपचारिक मान्यता\*\*** और **\*\*राजनयिक अधिकार\*\*** प्राप्त होते हैं।

\* यह पत्र दो देशों के बीच राजनयिक संबंधों को दर्शाता है।

☐ उदाहरण: "भारत के राष्ट्रपति द्वारा जारी प्रत्यय पत्र में लिखा होगा कि फलॉ व्यक्ति को अमेरिका में भारत का राजदूत नियुक्त किया गया है और उनसे अनुरोध है कि उसे राजनयिक अधिकार दिए जाएँ।"

☐ 2. **\*\*पूर्ण शक्ति पत्र (Full Powers / पूर्णाधिकार पत्र)\*\*** ☐ परिभाषा: **\*\*पूर्ण शक्ति पत्र\*\*** वह आधिकारिक दस्तावेज़ होता है जो किसी प्रतिनिधि (जैसे – विदेश मंत्री, राजदूत, विशेष दूत आदि) को किसी **\*\*विशेष अंतरराष्ट्रीय कार्य\*\***, जैसे कि **\*\*संधि पर हस्ताक्षर, वार्ता करना या समझौता करना\*\***, के लिए **\*\*पूर्ण अधिकार\*\*** प्रदान करता है।

☐ उपयोग: अंतरराष्ट्रीय **\*\*संधि वार्ताओं\*\***, **\*\*समझौतों\*\***, **\*\*संयुक्त घोषणाओं\*\***, या **\*\*उच्चस्तरीय वार्ताओं\*\*** में प्रयोग होता है।

\* यह दस्तावेज़ यह प्रमाणित करता है कि संबंधित व्यक्ति को **\*\*अपने देश की ओर से निर्णय लेने का पूरा अधिकार\*\*** है।

☐ महत्व: वियना संधि संधियों पर विधि (Vienna Convention on the Law of Treaties, 1969)\*\* के अनुसार, केवल वही व्यक्ति संधि पर हस्ताक्षर कर सकता है जिसे \*\*पूर्ण शक्ति पत्र\*\* प्राप्त हो (जब तक वह पहले से मान्यता प्राप्त उच्च पद पर न हो)।

☐ उदाहरण: "अगर भारत और नेपाल के बीच कोई जल संधि हो रही है, तो भारत सरकार अपने प्रतिनिधि को एक पूर्ण शक्ति पत्र देगी जिसमें लिखा होगा कि वह भारत की ओर से इस संधि पर बातचीत और हस्ताक्षर करने के लिए अधिकृत है।"

☐ अंतर सारणी में:

तत्व	प्रत्यय पत्र (Credentials)	पूर्ण शक्ति पत्र (Full Powers)
-----	-----	-----
उद्देश्य	राजदूत की नियुक्ति और मान्यता के लिए	संधि, समझौते या वार्ता के लिए अधिकार प्रदान करने हेतु
जारी करता है	राष्ट्रध्यक्ष (President/King)	सरकार / विदेश मंत्रालय / राष्ट्रध्यक्ष
उपयोग में	राजनयिक प्रत्यक्षीकरण में	अंतरराष्ट्रीय संधियों या वार्ताओं में
प्रापक	मेज़बान देश का राष्ट्रध्यक्ष	विशेष प्रतिनिधि या अधिकारी
कानूनी प्रभाव	राजदूत को अधिकारिक प्रतिनिधि बनाता है   व्यक्ति को कानूनी रूप से निर्णय लेने का अधिकार देता है	

\*\*"अग्रत्व का नियम" (Rule of Precedence) एक ऐसा राजनयिक या प्रशासनिक सिद्धांत है जिसके अनुसार विभिन्न पदाधिकारियों, अधिकारियों, अथवा प्रतिनिधियों की \*\*श्रेष्ठता (seniority) या प्राथमिकता (priority)\*\* का क्रम निर्धारित किया जाता है — विशेष रूप से \*\*सरकारी, राजनयिक या औपचारिक कार्यक्रमों\*\* में।

\*\*अग्रत्व का नियम (Rule of Precedence) क्या है?\*

यह एक औपचारिक क्रम है जो यह तय करता है कि किसी समारोह, बैठक, सम्मेलन या आयोजन में:

- \* किस अधिकारी को पहले स्थान दिया जाएगा,
- \* किसका भाषण पहले होगा,
- \* कौन किसके बगल में बैठेगा,
- \* किसका परिचय पहले कराया जाएगा,
- \* किसका झंडा या नाम पहले लगेगा आदि।

यह **औपचारिकता और सम्मान** सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक होता है।

☐ **राजनयिक क्षेत्र में अग्रत्व का नियम**

**वियना संधि (Vienna Convention on Diplomatic Relations, 1961)** के अनुसार, राजनयिकों का अग्रत्व मुख्यतः **प्रत्यय पत्र प्रस्तुत करने की तिथि** पर आधारित होता है।

उदाहरण: जो राजदूत पहले अपने **प्रत्यय पत्र** प्रस्तुत करता है, उसे अन्य के मुकाबले **वरिष्ठता (seniority)** प्राप्त होती है।

\* इसी आधार पर उन्हें कार्यक्रमों, राष्ट्रीय दिवसों, भोजों, या अन्य आयोजनों में **प्राथमिकता** दी जाती है।

☐ **भारत में अग्रत्व का नियम (Order of Precedence)**

भारत सरकार का एक आधिकारिक दस्तावेज़ है जिसे **"भारत में अग्रत्व का आदेश"** (Order of Precedence of India) कहा जाता है। इसमें राष्ट्रपति से लेकर राज्यों के मुख्यमंत्री, न्यायाधीश, सचिव, सेना प्रमुख आदि सभी पदाधिकारियों का क्रम निर्धारित है।

उदाहरण (संक्षिप्त रूप में):

1. राष्ट्रपति

2. उपराष्ट्रपति
3. प्रधानमंत्री
4. राज्यपाल (अपने राज्य में)
5. पूर्व राष्ट्रपति
6. उपप्रधानमंत्री / मुख्यमंत्री (राजधानी में)
7. भारत के मुख्य न्यायाधीश
8. लोकसभा अध्यक्ष
9. केंद्रीय मंत्री
10. राजदूत, उच्चायुक्त (देश में नियुक्त)

☞ यह क्रम विशेष सरकारी आयोजनों, गणतंत्र दिवस, शपथ ग्रहण, परेड, और उच्चस्तरीय बैठकों में बहुत महत्वपूर्ण होता है।

☞ **\*\*महत्त्व क्यों है?\***

\* यह **\*\*राजनयिक शिष्टाचार\*\*** और **\*\*सरकारी गरिमा\*\*** बनाए रखता है।

\* यह टकराव, असंतोष और अपमानजनक स्थिति से बचाता है।

\* यह व्यवस्था और अनुशासन सुनिश्चित करता है।

☞ निष्कर्ष: **\*\*"अग्रत्व का नियम"\*** औपचारिकता, गरिमा और कार्यकुशलता के लिए अत्यंत आवश्यक है, विशेष रूप से **\*\*राजनयिक और सरकारी कार्यक्रमों में\*\***, जहाँ कई देशों या विभागों के वरिष्ठ लोग एक साथ होते हैं।

## Chapter-11

### आदर्श राजनयिक

एक **आदर्श राजनयिक** (Ideal Diplomat) वह होता है जो अपने देश का प्रतिनिधित्व कुशलता, संयम और बुद्धिमत्ता से करता है, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शांति, सहयोग और समझदारी को बढ़ावा देता है। ऐसा व्यक्ति केवल विदेशी नीतियों का प्रवक्ता नहीं होता, बल्कि एक **कूटनीतिक सेतु** होता है जो दो देशों को जोड़ता है।

☐ **आदर्श राजनयिक से अपेक्षित पूर्व योग्यताएँ (Pre-requisites):**

- शैक्षणिक योग्यता:** \* अंतरराष्ट्रीय संबंध, राजनीति शास्त्र, कानून, इतिहास, या विदेशी भाषा में उच्च शिक्षा। \* अक्सर प्रशासनिक सेवाओं (जैसे IFS – Indian Foreign Service) के माध्यम से चयन।
- प्रशिक्षण:** \* विदेश नीति, कूटनीति, प्रोटोकॉल, और भाषाई दक्षता का विशेष प्रशिक्षण।  
\* अंतरराष्ट्रीय कानून और संधियों की समझ।
- भाषा ज्ञान:** \* अंग्रेज़ी के साथ-साथ एक या एक से अधिक विदेशी भाषाओं का ज्ञान।
- संवेदनशीलता की समझ:** \* विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता।
- नैतिकता और निष्ठा:** \* देश के हितों के प्रति पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी।

☐ **एक आदर्श राजनयिक के प्रमुख गुण (Key Qualities of an Ideal Diplomat):**

गुण	विवरण
☐ <b>बुद्धिमत्ता और विवेक</b>	हर परिस्थिति का शांत और तर्कसंगत विश्लेषण करने की क्षमता।

| □ **\*\*संचार कौशल\*\*** | स्पष्ट, प्रभावशाली और मर्यादित भाषा  
में संवाद करने की कला। |

| ☐ **\*\*सांस्कृतिक समझ\*\*** | स्थानीय संस्कृति, परंपरा और  
सामाजिक मान्यताओं की समझ। |

| ☐ **\*\*राजनीतिक सूझबूझ\*\*** | अंतरराष्ट्रीय राजनीति, शक्तिसंतुलन  
और विदेश नीति की गहरी जानकारी। |

| ☐ **\*\*संबंध निर्माण कौशल\*\*** | दोस्ती, सहयोग और आपसी विश्वास को  
बढ़ावा देना। |

| ☐ **\*\*धैर्य और संयम\*\*** | संकट और विरोध के समय भी शांति  
और समझदारी बनाए रखना। |

| ☐ **\*\*प्रेक्षण शक्ति\*\*** | छोटी-छोटी बातों से बड़े संकेत समझने की  
क्षमता। |

| ☐ **\*\*राजनयिक व्यवहार (Diplomatic Demeanor)\*\*** | मर्यादित, सौम्य, संतुलित और गरिमापूर्ण  
आचरण। |

| ☐ **\*\*निरंतर अध्ययनशीलता\*\*** | वैश्विक घटनाओं, इतिहास और  
अंतरराष्ट्रीय विकास की अद्यतित जानकारी रखना। |

☐ **\*\*एक आदर्श राजनयिक की भूमिका क्या होनी चाहिए?\***

1. **\*\*अपने देश का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व\*\*** करना।
2. **\*\*मेजबान देश के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों का निर्माण और संरक्षण\*\*** करना।
3. **\*\*विदेश नीति के उद्देश्यों को आगे बढ़ाना\*\*** – जैसे व्यापार, सुरक्षा, संस्कृति आदि।
4. **\*\*गोपनीय सूचनाएँ एकत्र करना\*\*** और अपनी सरकार को सूचित करना।
5. **\*\*भारतीय नागरिकों की सहायता\*\*** करना जो विदेश में हों (दूतावास कार्यों के माध्यम से)।

## Chapter -12

### राजनयिक भाषा

### ❓ **राजनयिक भाषा का अर्थ (Meaning of Diplomatic Language):**

**राजनयिक भाषा** से आशय है — ऐसी भाषा या शैली जिसका प्रयोग अंतरराष्ट्रीय संबंधों, वार्ताओं, बैठकों और कूटनीतिक संवादों में **सौम्यता, संतुलन और सावधानी** के साथ किया जाता है, ताकि आपसी सम्मान बना रहे, टकराव से बचा जा सके और संवाद की प्रक्रिया सकारात्मक बनी रहे।

❑ **राजनयिक भाषा की मुख्य विशेषताएँ:**

विशेषता	विवरण
❓ <b>सौम्यता (Politeness)</b>	कठोर या अपमानजनक शब्दों से परहेज। भाषा में शिष्टाचार बना रहता है।
❑ <b>संतुलन (Neutrality)</b>	किसी पक्ष का खुला समर्थन या विरोध करने से बचाव।
❓ <b>सटीकता (Precision)</b>	शब्दों का चयन बहुत सोच-समझकर किया जाता है, जिससे कोई गलत मतलब न निकले।
❓ <b>राजनीतिक चतुराई (Tactfulness)</b>	बात को इस तरह कहना कि भावनाएँ आहत न हों, पर संदेश स्पष्ट हो जाए।
❓ <b>गूढ़ता (Subtlety)</b>	कई बार सीधी बातों को संकेतों, संकेतभरी भाषा या घुमावदार तरीके से कहा जाता है।

| ☐ **\*\*प्रोटोकॉल अनुसार\*\*** | राजनयिक भाषा अक्सर औपचारिक और शिष्ट होती है, अंतरराष्ट्रीय प्रोटोकॉल का पालन करती है। |

☐ **\*\*उदाहरण के साथ समझें:\*\***

| सामान्य भाषा | राजनयिक भाषा

|

| ----- | ----- |

| "आपका देश झूठ बोल रहा है।" | "हमें प्राप्त जानकारी कुछ भिन्न संकेत देती है।"

|

| "हम आपकी बात नहीं मानेंगे।" | "हम आपके प्रस्ताव पर विचार करेंगे, किंतु हमारी प्राथमिकताएँ कुछ भिन्न हैं।" |

| "यह प्रस्ताव अस्वीकार्य है।" | "यह प्रस्ताव हमारी वर्तमान नीतियों से मेल नहीं खाता।"

|

| "हमें शक है आपके इरादों पर।" | "हमें आगे की पारदर्शिता की अपेक्षा है।"

|

☐ **\*\*राजनयिक भाषा का उद्देश्य:\*\***

1. **\*\*संवेदनशील मुद्दों को शांति से उठाना।\*\***
2. **\*\*टकराव की स्थिति से बचना।\*\***
3. **\*\*राष्ट्रों के बीच संवाद और सहयोग बनाए रखना।\*\***
4. **\*\*प्रतिकूल बात को भी सम्मानपूर्वक व्यक्त करना।\*\***
5. **\*\*सरकारी नीतियों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करना।\*\***

---

## 2 ♂ □ **\*\*राजनयिक भाषा क्यों आवश्यक है?\***

\* क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक शब्द या वाक्य भी **\*\*राजनीतिक संकट\*\*** पैदा कर सकता है।

\* राजनयिक भाषा **\*\*संबंध बनाए रखने का एक सेतु\*\*** है — चाहे मतभेद हों, फिर भी संवाद चलता रहे।

\* यह **\*\*मूल्य आधारित संवाद\*\*** और **\*\*वैश्विक गरिमा\*\*** का हिस्सा है।

2 निष्कर्ष: **\*\*राजनयिक भाषा\*\*** वह कला है जिसमें **\*\*"कठिन बात को भी सहजता से कहना"\*\*, और **\*\*"संवेदनशील मुद्दों को बिना विवाद के उठाना"\*\*** शामिल होता है। यह भाषा **\*\*राजनयिकों का सबसे प्रभावी उपकरण\*\*** होती है, जो युद्ध को भी संवाद में बदल सकती है।**

### 2 **\*\*राजनयिक शब्दावली (Diplomatic Terminology)\*\***

राजनयिक कार्यों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्रयोग होने वाली विशिष्ट शब्दावली को **\*\*"राजनयिक शब्दावली"\*** कहा जाता है। ये शब्द अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत होते हैं और विदेश नीति, संधियों, वार्ताओं, समझौतों और कूटनीतिक संवादों में प्रयुक्त होते हैं।

**\*\*महत्वपूर्ण राजनयिक शब्दावली की सूची:\***

2   शब्द	अर्थ
1 □   <b>**राजदूत (Ambassador)**</b> अन्य देश में नियुक्त होता है।	किसी देश का सर्वोच्च प्रतिनिधि जो 
2 □   <b>**दूतावास (Embassy)**</b> कार्य करता है।	वह स्थान जहाँ राजदूत और उनका स्टाफ 
3 □   <b>**दूत (Envoy)**</b> राजदूत से निम्न स्तर का पद।	विशेष कार्य के लिए भेजा गया प्रतिनिधि; 
4 □   <b>**प्रत्यय पत्र (Letter of Credence)**</b> को मान्यता प्रदान करता है।	वह पत्र जिससे राष्ट्राध्यक्ष किसी राजदूत 

- | 5  | **\*\*पूर्ण शक्ति पत्र (Full Powers)\*\*** | कोई संधि या समझौता करने हेतु दिया गया अधिकारिक पत्र। |
- | 6  | **\*\*पूर्व स्वीकृति (Agrément)\*\*** | किसी देश से उसके यहाँ राजदूत भेजने से पहले उसकी स्वीकृति लेना। |
- | 7  | **\*\*राजनयिक शिष्टाचार (Diplomatic Protocol)\*\*** | कूटनीतिक व्यवहार के लिए निर्धारित नियम व रीति-रिवाज़। |
- | 8  | **\*\*प्रत्यक्षीकरण (Presentation of Credentials)\*\*** | राजदूत द्वारा मेज़बान देश के राष्ट्राध्यक्ष को प्रत्यय पत्र सौंपना। |
- | 9  | **\*\*कूटनीति (Diplomacy)\*\*** | देशों के बीच संबंधों को संभालने की कला और नीति। |
- | 10  | **\*\*दूतिय दर्जे का अधिकारी (Minister Plenipotentiary)\*\*** | राजदूत से नीचे लेकिन उच्च स्तर का कूटनीतिक अधिकारी। |
- | 11  1  | **\*\*कार्यवाहक राजदूत (Chargé d'affaires)\*\*** | जब राजदूत अनुपस्थित हो, तो उसका स्थान लेने वाला अधिकारी। |
- | 12  2  | **\*\*कौंसल (Consul)\*\*** | वह अधिकारी जो व्यापार, नागरिकों की सहायता और प्रशासनिक कार्य करता है, विशेषकर दूतावास से अलग। |
- | 13  3  | **\*\*कूटनीतिक छूट (Diplomatic Immunity)\*\*** | राजनयिकों को कानूनी दंड से मिलने वाली सुरक्षा। |
- | 14  4  | **\*\*अधिसूचना (Note Verbale)\*\*** | औपचारिक लेकिन शिष्ट और अनौपचारिक शैली में दी गई राजनयिक सूचना। |
- | 15  5  | **\*\*श्वेत पत्र (White Paper)\*\*** | सरकार द्वारा किसी नीति या घटना पर जारी की गई अधिकारिक रिपोर्ट। |
- | **\*\*गुप्त कूटनीति (Secret Diplomacy)\*\*** | गुप्त रूप से की गई वार्ता या समझौते। |

## Chapter –13

### अमेरिका के विदेश मंत्रालय का संगठन

### 1.1 \*\*अमेरिका के राज्य विभाग (U.S. Department of State) के संगठन की व्याख्या\*\*

**राज्य विभाग (Department of State)** अमेरिका की **विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों** का सर्वोच्च प्रशासनिक निकाय है। इसे भारत में "विदेश मंत्रालय" (Ministry of External Affairs) के समकक्ष समझा जा सकता है।

1.2 **मुख्य उद्देश्य:** अमेरिका की विदेश नीति का निर्माण और कार्यान्वयन।

- \* अन्य देशों के साथ राजनयिक संबंधों का प्रबंधन।
- \* अमेरिका के नागरिकों और हितों की विदेशों में सुरक्षा।
- \* अंतरराष्ट्रीय समझौतों, संगठनों और वैश्विक विकास में भागीदारी।

**संगठनात्मक संरचना (Organizational Structure):**

नीचे अमेरिका के राज्य विभाग का विस्तृत संगठनात्मक ढांचा दिया गया है:

1. **विदेश मंत्री (Secretary of State)**

- \* यह राज्य विभाग का **मुख्य प्रमुख** होता है।
  - \* राष्ट्रपति के बाद यह पद **सबसे वरिष्ठ कैबिनेट पद** है।
  - \* यह व्यक्ति अमेरिका की विदेश नीति का नेतृत्व करता है और राष्ट्रपति को सलाह देता है।
- > वर्तमान में (2025 तक) **एंटी ब्लिंकन** (Antony Blinken) इस पद पर हैं। **(कृपया ताज़ा जानकारी के लिए पुष्टि करें।)**

2. **उप विदेश मंत्री (Deputy Secretary of State)**

- \* विदेश मंत्री का मुख्य सहयोगी।

\* विभाग के प्रशासन और नीतिगत कार्यों का पर्यवेक्षण करता है।

\* विदेश मंत्री की अनुपस्थिति में कार्यभार संभालता है।

### 3. \*\*राजनयिक विभागों के अंतर्गत सहायक मंत्रीगण (Under Secretaries)\*\*

राज्य विभाग को विभिन्न \*\*नीतिगत क्षेत्रों\*\* में विभाजित किया गया है, जिनका नेतृत्व "Under Secretaries" करते हैं:

#### (a) \*\*Under Secretary for Political Affairs\*\*

राजनीतिक मामलों का संचालन (जैसे मध्य-पूर्व, एशिया, अफ्रीका नीति)

\* विभिन्न क्षेत्रों के सहायक सचिव इसके अधीन कार्य करते हैं।

#### (b) \*\*Under Secretary for Economic Growth, Energy, and the Environment\*\*

आर्थिक नीति, ऊर्जा कूटनीति, पर्यावरण समझौते आदि।

#### (c) \*\*Under Secretary for Arms Control and International Security\*\*

रक्षा, हथियार नियंत्रण, सुरक्षा सहयोग।

#### (d) \*\*Under Secretary for Public Diplomacy and Public Affairs\*\*

अमेरिकी छवि निर्माण, मीडिया, सांस्कृतिक कार्यक्रम।

#### (e) \*\*Under Secretary for Management\*\*

विभाग की आंतरिक प्रशासन व्यवस्था (मानव संसाधन, वित्त, बजट, सुरक्षा)।

#### (f) \*\*Under Secretary for Civilian Security, Democracy, and Human Rights\*\*

मानवाधिकार, लोकतंत्र, शरणार्थी नीति, आतंकवाद विरोध।

### 4. \*\*क्षेत्रीय ब्यूरो (Regional Bureaus)\*\*

ये ब्यूरो विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के लिए होते हैं। प्रत्येक का नेतृत्व एक \*\*Assistant Secretary\*\* करता है।

उदाहरण: \* \*\*Bureau of South and Central Asian Affairs (SCA)\*\*

→ भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश आदि क्षेत्र।

\* \*\*Bureau of African Affairs (AF)\*\*

\* \*\*Bureau of European and Eurasian Affairs (EUR)\*\*

\* \*\*Bureau of East Asian and Pacific Affairs (EAP)\*\*

\* \*\*Bureau of Western Hemisphere Affairs (WHA)\*\*

\* \*\*Bureau of Near Eastern Affairs (NEA)\*\*

☐ 5. \*\*कार्यान्वयनिक कार्यालय व कार्यक्रम (Functional Bureaus & Offices)\*\*

ये ऐसे विभाग हैं जो विशिष्ट विषयों पर कार्य करते हैं:

ब्यूरो/कार्यालय	कार्यक्षेत्र
-----	-----
Bureau of Consular Affairs	वीजा, पासपोर्ट, अमेरिकी नागरिकों की सुरक्षा ।
Bureau of International Organization Affairs	संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठन ।
Bureau of Counterterrorism	आतंकवाद विरोध नीति
-----	-----
Office of the Legal Adviser	अंतरराष्ट्रीय कानून संबंधी सलाह ।
Office of Global Women's Issues	महिलाओं के अधिकारों पर विदेश नीति

☐ 6. \*\*दूतावास और वाणिज्य दूतावास (Embassies & Consulates)\*\*

\* विश्व के लगभग सभी देशों में अमेरिका के \*\*दूतावास (Embassy)\*\* और \*\*वाणिज्य दूतावास (Consulate)\*\* होते हैं। \* इन्हें \*\*राजदूत (Ambassador)\*\* या \*\*Consul General\*\* संचालित करते हैं।

---

### ### 7. **\*\*विशेष दूत और प्रतिनिधि (Special Envoys & Representatives)\*\***

\* विशिष्ट विषयों (जैसे जलवायु परिवर्तन, ईरान नीति, मानवाधिकार आदि) के लिए नियुक्त किए गए वरिष्ठ राजनयिक।

---

### ## □ **\*\*राज्य विभाग का मुख्यालय:\*\***

\* □ **\*\*Harry S Truman Building\*\***, वॉशिंगटन, डी.सी., USA

\* यह विभाग 1789 में स्थापित हुआ था और अमेरिका का पहला कार्यकारी विभाग था।

### □ **\*\*संक्षिप्त रूप में संगठन चार्ट:\*\***

President

|

Secretary of State

|

Deputy Secretary

└─ Under Secretaries (6)

- | └─ Assistant Secretaries (Regional Bureaus)
- | └─ Assistant Secretaries (Functional Bureaus)
- |
- └─ Ambassadors & Special Envoys

“”<sup>2</sup> **निष्कर्ष:** **अमेरिकी राज्य विभाग** एक अत्यंत संगठित और बहुस्तरीय प्रशासनिक ढांचा है, जो दुनिया भर में अमेरिकी विदेश नीति को **प्रभावी ढंग से लागू** करता है। इसकी कार्यप्रणाली में **नीतिगत विश्लेषण**, **राजनयिक संवाद**, **अंतरराष्ट्रीय सहयोग**, और **नागरिक सहायता** सभी शामिल होते हैं।

## Chapter -14

### भारतीय विदेश मंत्रालय का संगठन

#### **भारतीय विदेश मंत्रालय के संगठन का विस्तार से वर्णन**

**भारतीय विदेश मंत्रालय** (Ministry of External Affairs - MEA) भारत सरकार का वह मंत्रालय है जो **विदेश नीति**, **अंतरराष्ट्रीय संबंध**, और **वैश्विक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व** करने हेतु जिम्मेदार है। इसे हिन्दी में **"विदेश मंत्रालय"** कहा जाता है। यह भारत की एक **अत्यंत महत्वपूर्ण संवेदनशील प्रशासनिक इकाई** है, जो वैश्विक कूटनीति का संचालन करती है।

#### **मुख्यालय**

साउथ ब्लॉक, रायसीना हिल, **नई दिल्ली**, भारत।

#### **मुख्य उद्देश्य / कार्य:**

- \* भारत की विदेश नीति का निर्माण व कार्यान्वयन।
- \* अन्य देशों के साथ कूटनीतिक संबंध बनाए रखना।
- \* अंतरराष्ट्रीय संगठनों (UN, SAARC, G20 आदि) में भारत का प्रतिनिधित्व।
- \* विदेशों में बसे भारतीय नागरिकों और प्रवासी भारतीयों की सहायता।
- \* वीज़ा, पासपोर्ट, OCI/PIO कार्ड, राजनयिक वार्ताएँ आदि का संचालन।

**\*\*संगठनात्मक संरचना (Organizational Structure):\*\***

1. **\*\*विदेश मंत्री (External Affairs Minister)\*\***

- \* यह मंत्रालय का **\*\*शीर्ष पद\*\*** है।
- \* मंत्री कैबिनेट रैंक का होता है और **\*\*भारत की विदेश नीति का मुख्य दिशा-निर्देशक\*\*** होता है। वर्तमान में: **\*\*एस. जयशंकर (Dr. S. Jaishankar)\*\***

2. **\*\*राज्य मंत्री / उप मंत्री (Ministers of State for External Affairs)\*\***

- \* विदेश मंत्री की सहायता के लिए 1 या अधिक राज्य मंत्री नियुक्त होते हैं।
- \* वे विभिन्न विभागों या क्षेत्रों की जिम्मेदारी संभालते हैं।

3. **\*\*विदेश सचिव (Foreign Secretary)\*\*** यह **\*\*भारतीय विदेश सेवा (IFS)\*\*** का सर्वोच्च अधिकारी होता है।

- \* मंत्रालय के प्रशासनिक कार्यों और नीतियों का संचालन करता है।
- \* सीधे विदेश मंत्री को रिपोर्ट करता है।

4. **\*\*विशेष सचिव, संयुक्त सचिव और निदेशक स्तर (Secretarial Structure)\*\***

- **\*\*विशेष सचिव (Special Secretary)\*\*** \* विदेश सचिव के अधीन कार्य करते हैं।\* कुछ विशिष्ट क्षेत्रों जैसे रणनीतिक मामले, प्रशासन, आदि के प्रमुख होते हैं।

**\*\*संयुक्त सचिव (Joint Secretary)\*\* \* विभिन्न **\*\*क्षेत्रीय\*\*** (जैसे – यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, खाड़ी देश) या **\*\*कार्यात्मक\*\*** (जैसे – UN, आर्थिक कूटनीति, दूतावास समन्वय) डिवीजनों के प्रमुख।**

▪ □ **\*\*निदेशक / उप सचिव / अवर सचिव\*\***

संयुक्त सचिव की निगरानी में कार्य करते हैं।

\* दिन-प्रतिदिन के प्रशासन, रिपोर्टिंग, समन्वय आदि का काम देखते हैं।

▢ 5. **\*\*विभागीय संरचना (Divisions of MEA)\*\*** MEA में **\*\*क्षेत्रीय (Regional)\*\*** और **\*\*कार्यात्मक (Functional)\*\*** दोनों प्रकार के डिवीजन होते हैं।

**\*\*क्षेत्रीय डिवीजन (Regional Divisions):\*\***

इनका काम विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों से संबंधित है।

| डिवीजन | कार्य क्षेत्र |

| ----- | ----- |

| AMS | अमेरिका और कनाडा

| EAMER | पूर्वी एशिया

| WANA | पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका

| EUR | यूरोप

| SAARC / PAI | दक्षिण एशिया (नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि) |

| AFR | अफ्रीका

**\*\*कार्यात्मक डिवीजन (Functional Divisions):\*\***

| डिवीजन | कार्य |

| UNP | संयुक्त राष्ट्र और बहुपक्षीय कूटनीति |

- | ER | आर्थिक संबंध, G20, विश्व बैंक आदि
- | CPV | कौंसुलर, पासपोर्ट, वीजा संबंधी कार्य
- | DPA | प्रचार व जन कूटनीति (Public Diplomacy)
- | OIA | प्रवासी भारतीय मामले (NRI/PIO)
- | MER | मीडिया और प्रेस संबंध
- | L\&T | विधि और संधि विभाग
- | Admin | मानव संसाधन, प्रशासन

6. **\*\*विदेश में भारतीय मिशन (Indian Missions Abroad)\*\***

भारत का विदेश मंत्रालय विदेशों में **\*\*दूतावासों\*\***, **\*\*उच्चायोगों\*\***, और **\*\*वाणिज्य दूतावासों\*\*** के माध्यम से कार्य करता है:

मिशन	विवरण
-----   -----	
<input checked="" type="checkbox"/> <b>**उच्चायोग (High Commission)**</b>	राष्ट्रमंडल देशों में (जैसे – ब्रिटेन, कनाडा)।
<input checked="" type="checkbox"/> <b>**दूतावास (Embassy)**</b>	गैर-राष्ट्रमंडल देशों में (जैसे – अमेरिका, फ्रांस)।
<input type="checkbox"/> <b>**वाणिज्य दूतावास (Consulate)**</b>	बड़े शहरों में नागरिक सेवा और व्यापारिक कार्यों के लिए।

प्रत्येक मिशन का नेतृत्व एक **\*\*राजदूत (Ambassador)\*\*** या **\*\*उच्चायुक्त (High Commissioner)\*\*** करते हैं।

7. **\*\*प्रवासी भारतीयों के लिए विशेष विभाग\*\***

विदेश मंत्रालय के अंतर्गत **OIA (Overseas Indian Affairs)** डिवीजन काम करता है जो: NRI और PIO की सहायता करता है।

\* प्रवासी दिवस (Pravasi Bharatiya Divas) का आयोजन करता है।

\* आपातकालीन स्थितियों में नागरिकों की मदद करता है।

8. **पासपोर्ट सेवा प्रणाली (Passport Seva System)**

\* CPV डिवीजन (Consular, Passport and Visa Division) के अंतर्गत।

\* देशभर में **पासपोर्ट सेवा केंद्र (PSKs)** और **डाकघरों में पासपोर्ट सेवा केंद्र (POPSKs)**।

☐ **संगठनात्मक चार्ट (Simplified Hierarchy):**

प्रधानमंत्री

विदेश मंत्री (EAM)

राज्य मंत्री (MoS)

विदेश सचिव (Foreign Secretary)

विशेष सचिव

संयुक्त सचिव (Divisions)

निदेशक / उप सचिव / अवर सचिव

विदेशी मिशन – राजदूत / उच्चायुक्त / कौंसल **निष्कर्ष: भारतीय विदेश मंत्रालय एक संगठित, बहुस्तरीय और रणनीतिक संस्था है, जो भारत की विदेश नीति को विश्व स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू करती है। इसके कार्य क्षेत्र में राजनयिक संबंध, अंतरराष्ट्रीय संगठन, प्रवासी भारतीय, मानवाधिकार, व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क शामिल हैं।**

## Chapter –15

### ब्रिटिश राजनयिक पद्धति

**\*ब्रिटिश राजनयिक पद्धति पर लेख\*\***

**\*भूमिका:\*\*** ब्रिटिश राजनयिक पद्धति विश्व की सबसे पुरानी, संगठित और प्रभावशाली कूटनीतिक प्रणालियों में से एक मानी जाती है। ब्रिटेन ने अपने साम्राज्य विस्तार के समय एक ऐसा राजनयिक तंत्र विकसित किया, जिसने न केवल ब्रिटिश हितों की रक्षा की, बल्कि वैश्विक राजनीति, व्यापार और युद्धों में भी अपनी गहरी छाप छोड़ी।

**\*ब्रिटिश राजनयिक पद्धति का इतिहास:\*\*** ब्रिटेन में संगठित राजनयिक व्यवस्था की शुरुआत **\*\*16वीं सदी\*\*** में हुई, लेकिन इसे संस्थागत रूप 1782 में मिला, जब **\*\*Foreign Office (विदेश कार्यालय)\*\*** की स्थापना हुई। ब्रिटेन ने अपनी कूटनीति के माध्यम से अपने उपनिवेशों में शासन किया, देशों से संधियाँ कीं, और साम्राज्यवादी हितों को बढ़ावा दिया।

मुख्य विशेषताएँ:**\*\*1. \*\*केन्द्र में विदेश मंत्रालय (Foreign, Commonwealth & Development Office - FCDO):\*\*** ब्रिटिश राजनयिक प्रणाली का संचालन **\*\*FCDO\*\*** के माध्यम से होता है, जो विदेश नीति, अंतरराष्ट्रीय विकास, राष्ट्रमंडल देशों और ब्रिटिश नागरिकों की सहायता जैसे विषयों का प्रबंधन करता है।

☐ **2. \*\*राजनयिक सेवाएँ (Diplomatic Service):\*\*** ब्रिटिश राजनयिक सेवा को **\*\*Her Majesty's Diplomatic Service\*\*** कहा जाता है। यह विशेषज्ञ राजनयिकों का समूह होता है जो दुनियाभर में ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

☐ **3. \*\*राष्ट्रमंडल आधारित कूटनीति (Commonwealth Diplomacy):\*\***

ब्रिटेन की एक विशेषता है कि वह अपने पूर्व उपनिवेशों के साथ **\*\*राष्ट्रमंडल (Commonwealth)\*\*** के माध्यम से एक विशेष संबंध बनाए रखता है।

☐ **4. \*\*विकेंद्रीकृत परंतु अनुशासित संरचना:\*\*** ब्रिटिश दूतावासों को नीतिगत स्वतंत्रता दी जाती है, लेकिन उनका संचालन कड़े प्रोटोकॉल और पेशेवर मानकों के तहत होता है।

5. **'Quiet Diplomacy'** की परंपरा: ब्रिटेन की कूटनीति में शांति, गोपनीयता और परदे के पीछे संवाद (back-channel diplomacy) को प्राथमिकता दी जाती है।

**ब्रिटिश राजनयिक पद्धति के अंग:**

| अंग

| कार्य

| **Foreign Secretary** | विदेश मंत्रालय का प्रमुख; विदेश नीति का दिशा-निर्देशक |

| **Permanent Under-Secretary** | विदेश मंत्रालय का प्रशासनिक प्रमुख (सिविल सेवक)

| **Ambassadors/High Commissioners** | अन्य देशों में ब्रिटेन के उच्चाधिकारी

| **Consulates** | वाणिज्य, वीजा और नागरिक सहायता केंद्र

**प्रशिक्षण और चयन:**

राजनयिकों का चयन **UK Civil Service Fast Stream** या अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से होता है।

\* उन्हें विदेश नीति, क्षेत्रीय अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय कानून, भाषाएँ और कूटनीतिक प्रोटोकॉल में प्रशिक्षित किया जाता है।

**ब्रिटिश राजनयिकों के प्रमुख गुण:** गहरी विषयगत समझ

\* विनम्र एवं सधी हुई भाषा शैली

\* शांति व संवाद पर जोर

\* सांस्कृतिक संवेदनशीलता

\* राष्ट्रहित के लिए रणनीतिक लचीलापन

**ब्रिटिश पद्धति की वैश्विक भूमिका:**

\* संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता

- \* यूरोपीय और ट्रांस-अटलांटिक संबंधों में महत्वपूर्ण भूमिका
- \* NATO, G7, Commonwealth जैसे संगठनों में प्रभावी उपस्थिति
- \* वैश्विक संकटों (जैसे – अफगानिस्तान, यूक्रेन, जलवायु परिवर्तन) में मध्यस्थता की भूमिका

ब्रिटिश कूटनीति की आलोचना:\*\*

1. **\*\*औपनिवेशिक मानसिकता:\*\*** कई देशों में ब्रिटेन की कूटनीति को अब भी उपनिवेशवादी दृष्टिकोण से जोड़ा जाता है।
2. **\*\*'Divide and Rule' की रणनीति:\*\*** इतिहास में इसकी कूटनीति ने कई बार विभाजन को प्रोत्साहित किया।
3. **\*\*स्वार्थसिद्धि:\*\*** ब्रिटिश विदेश नीति कई बार केवल अपने व्यापारिक या भू-राजनीतिक हितों पर केंद्रित रही है।

**\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*ब्रिटिश राजनयिक पद्धति\*\*** एक परिष्कृत, ऐतिहासिक और अत्यधिक पेशेवर प्रणाली है, जिसने विश्व कूटनीति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि इसकी आलोचनाएँ भी रही हैं, परंतु इसकी **\*\*गोपनीय, शांतिपूर्ण और व्यावहारिक शैली\*\*** आज भी वैश्विक मंचों पर प्रभावशाली मानी जाती है।

भारत सहित अनेक राष्ट्रों की राजनयिक प्रणालियों पर ब्रिटिश प्रणाली का गहरा प्रभाव पड़ा है, और यह प्रभाव आगे भी बना रहेगा।

## Chapter –16

### आधुनिक राजनय में प्रचार

□ **\*\*प्रचार की परिभाषा (Definition of Propaganda in Hindi):\*\***

प्रचार\*\* का सामान्य अर्थ है – किसी विचार, मत, विचारधारा, उत्पाद, या सूचना को इस उद्देश्य से फैलाना कि लोग उसे स्वीकार करें या उस पर विश्वास करें।

□ **\*\*सरल परिभाषा:\*\***

**\*\*"जब किसी विशेष विचार, सिद्धांत, नीति, या उद्देश्य को लोगों तक इस प्रकार पहुँचाया जाता है कि वे उसे मानने लगें, तो उस प्रक्रिया को प्रचार कहते हैं।"**

□ **\*\*विशेष रूप से\*\***, प्रचार का प्रयोग:

\* **\*\*जनमत को प्रभावित करने\*\*** के लिए किया जाता है।

\* यह अक्सर **\*\*राजनीति, धर्म, युद्ध, या विज्ञापन\*\*** से जुड़ा होता है।

\* प्रचार **\*\*तथ्यों पर आधारित\*\*** भी हो सकता है, या कभी-कभी **\*\*भ्रामक व एकतरफा\*\*** भी।

□ **\*\*प्रचार के प्रकार:\*\***

| प्रकार | विवरण

| □ **\*\*राजनीतिक प्रचार\*\*** | किसी राजनीतिक दल या विचारधारा को बढ़ावा देना।

| □ **\*\*धार्मिक प्रचार\*\*** | किसी धर्म या मत को फैलाना (जैसे - धर्म प्रचारक कार्य)।

| □ **\*\*व्यावसायिक प्रचार\*\*** | किसी उत्पाद या सेवा का विज्ञापन करना।

| □ **\*\*वैचारिक प्रचार\*\*** | समाज में किसी विचारधारा को प्रचलित करना (जैसे - पूंजीवाद, समाजवाद)। |

□ **उदाहरण:** चुनाव के समय दलों द्वारा टीवी, पोस्टर और सोशल मीडिया के माध्यम से विचार फैलाना = **राजनीतिक प्रचार**

\* कंपनियों द्वारा उत्पाद की विशेषताओं को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना = **व्यावसायिक प्रचार**

□ **अंग्रेजी में परिभाषा:** **"Propaganda is the dissemination of information—facts, arguments, rumors, half-truths, or lies—to influence public opinion."**

**निष्कर्ष:** **प्रचार** एक प्रभावशाली उपकरण है जिसका प्रयोग किसी भी विचार, उत्पाद, या नीति को समाज में प्रचलित करने के लिए किया जाता है। यह सकारात्मक भी हो सकता है (जैसे - टीकाकरण का प्रचार), और नकारात्मक भी (जैसे - झूठी अफवाहें फैलाना)। इसलिए प्रचार को **समझदारी और विवेक के साथ ग्रहण करना चाहिए**।

□ **राजनयिक प्रचार के उद्देश्य, विधियाँ और उपकरण**

□ **परिचय:** **राजनयिक प्रचार** (Diplomatic Propaganda) एक ऐसी कूटनीतिक गतिविधि है जिसमें कोई राष्ट्र, अपने **राष्ट्रीय हितों**, **वैश्विक छवि**, और **विदेश नीति** को अंतरराष्ट्रीय समुदाय में **प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत** करता है, ताकि वह जनमत और सरकारों को अपने पक्ष में कर सके। यह "प्रचार" शब्द का एक **सौम्य, नियंत्रित और रणनीतिक रूप** है, जिसका प्रयोग **विदेश नीति के समर्थन**, **विपक्षी विचारों को निष्क्रिय करने**, और **सांस्कृतिक प्रभाव** बढ़ाने के लिए किया जाता है।

□ **1. राजनयिक प्रचार के उद्देश्य (Objectives of Diplomatic Propaganda):**

उद्देश्य	विवरण
□ <b>राष्ट्रीय छवि निर्माण</b> करना।	देश की सकारात्मक छवि को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करना।
□ <b>राष्ट्रहितों की रक्षा</b> करना।	विदेशों में अपने हितों के खिलाफ हो रहे प्रचार का खंडन करना।

**\*\*वैश्विक जनमत प्रभावित करना\*\*** | अंतरराष्ट्रीय जनता, मीडिया, सरकारों को अपनी नीतियों के पक्ष में करना। |

| □ **\*\*कूटनीतिक संबंध मजबूत करना\*\*** | अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंधों को प्रोत्साहित करना। |

| □ **\*\*प्रतिकूल प्रचार का उत्तर देना\*\*** | प्रतिद्वंद्वी देशों द्वारा फैलाए गए झूठे या भ्रामक प्रचार का खंडन। |

| □ **\*\*सांस्कृतिक प्रभाव विस्तार\*\*** | अपनी भाषा, संस्कृति, मूल्यों और विचारों को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाना। |

## **\*\*2. राजनयिक प्रचार की विधियाँ (Methods of Diplomatic Propaganda):\*\***

| विधि | विवरण

| □ **\*\*जनसंचार माध्यमों का प्रयोग\*\*** | अंतरराष्ट्रीय मीडिया, टीवी, रेडियो, समाचार पत्रों में अपनी बात रखना। |

| □ **\*\*डिजिटल प्रचार\*\*** | सोशल मीडिया, वेबसाइट्स, वीडियो, ब्लॉग आदि के माध्यम से संवाद। |

| □ **\*\*राजनयिक वक्तव्य और भाषण\*\*** | नेताओं के अंतरराष्ट्रीय मंचों पर दिए गए भाषण (जैसे - UN में PM का संबोधन)। |

| □ **\*\*सांस्कृतिक कार्यक्रम और आदान-प्रदान\*\*** | फिल्मों, संगीत, कला, नृत्य के ज़रिए सांस्कृतिक प्रभाव डालना। |

| □ **\*\*शैक्षिक और अकादमिक कार्यक्रम\*\*** | विदेशी छात्रों को स्कॉलरशिप देना, अपने विश्वविद्यालयों को बढ़ावा देना। |

| ➤ □ **\*\*राजनयिक यात्राएँ और शिखर सम्मेलन\*\*** | उच्चस्तरीय संवाद और अंतरराष्ट्रीय बैठकों में भाग लेना। |

| □ **\*\*प्रेस विज्ञप्तियाँ और दस्तावेज़\*\*** | सरकारी रिपोर्ट, नीति पत्र, श्वेत पत्र आदि के माध्यम से सूचना देना। |

□ **\*\*3. राजनयिक प्रचार के प्रमुख उपकरण (Tools of Diplomatic Propaganda):\*\***

| उपकरण | कार्य

|

| ----- | -----  
----- |

| □ **\*\*सरकारी मीडिया चैनल\*\*** | जैसे - विदेश मंत्रालय की वेबसाइट, "प्रसार भारती", "All India Radio External Services" |

| □ **\*\*सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म\*\*** | Twitter, Facebook, YouTube, Instagram पर राजनयिक खातों द्वारा प्रचार |

| □ **\*\*डॉक्यूमेंट्री और फिल्में\*\*** | राष्ट्र की संस्कृति, विकास और उपलब्धियों को प्रस्तुत करना |

| □ **\*\*संस्कृतिक केंद्र और दूतावास\*\*** | ICCR, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, भाषा पाठशालाएँ

| □ **\*\*प्रकाशन\*\*** | पत्रिकाएँ, पुस्तकें, नीति दस्तावेज़, शोध लेख

| □ **\*\*राजनयिक प्रतिनिधिमंडल\*\*** | राजनयिकों और नेताओं की विदेश यात्राएँ व बातचीत |

| □ **\*\*अंतरराष्ट्रीय सहायता कार्यक्रम\*\*** | विकास सहायता के माध्यम से सकारात्मक प्रभाव बनाना |

□ **\*\*उदाहरण (Examples):\*\***

1. **\*\*भारत की "नमस्ते दुनिया" अभियान\*\*** - कोविड के दौरान भारत की वैश्विक छवि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत करना।

2. **\*\*"इंडिया@75" कार्यक्रम\*\*** - आज़ादी के 75 वर्षों की उपलब्धियों को विदेशों में प्रचारित करना।

3. **\*\*यूक्रेन-रूस युद्ध पर भारत का संतुलित पक्ष रखने वाला प्रचार\*\*** - संयमित बयान और कूटनीतिक भाषा का प्रयोग।

4. **\*\*"इंडिया स्टोरी" का प्रचार\*\*** - भारत को उभरती हुई आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना।

□ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*राजनयिक प्रचार\*\*** आज की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक **\*\*अहम रणनीतिक साधन\*\*** बन चुका है। यह किसी राष्ट्र की **\*\*छवि, नीति और शक्ति को स्थापित करने\*\*** का माध्यम है। जब यह **\*\*सत्यमार्गी, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण\*\*** होता है, तो यह राष्ट्रहित की दिशा में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाता है।

## Chapter-17

### यौद्धिक राजनय

**\*\*सर्वाधिकारवादी राजनय\*\*** (Authoritarian Diplomacy)

**\*\*परिभाषा:\*\*** **\*\*"सर्वाधिकारवादी राजनय"\*** वह कूटनीतिक प्रणाली है जिसमें विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों का संचालन किसी **\*\*एकाधिकारवादी शासन व्यवस्था\*\*** के अंतर्गत होता है, जहाँ निर्णय-making का अधिकार सीमित व्यक्तियों या सत्ताधारी दल के पास केंद्रित होता है।

**\*\*मुख्य विशेषताएँ:\*\***

विशेषता	विवरण
□ <b>**जन सहभागिता का अभाव**</b> संसद की भूमिका नगण्य होती है।	विदेश नीति में आम जनता, मीडिया या
□ <b>**सूचना पर नियंत्रण**</b> केवल सरकारी संस्करण सामने आता है।	सरकार प्रचार और मीडिया को नियंत्रित करती है;
□ <b>**राष्ट्रहित के संकीर्ण परिभाषा**</b>	विदेश नीति राष्ट्र की बजाय सत्ताधारी दल या शासक के हितों पर आधारित होती है।
□ <b>**बल और भय की नीति**</b> दमन या सैन्य शक्ति का प्रयोग।	राजनयिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए धमकी,
□ <b>**राजनयिक संवाद में कठोरता**</b> अपनाई जाती है।	संवाद की बजाय आदेशात्मक या आक्रामक शैली

□ **\*\*सर्वाधिकारवादी राजनय के उद्देश्य:\*\***

1. **\*\*शासक वर्ग के हितों की रक्षा करना\*\***
2. **\*\*राजनीतिक विरोध को वैश्विक स्तर पर दबाना या निष्क्रिय करना\*\***
3. **\*\*राजनीतिक स्थायित्व बनाए रखना (भले ही जनतंत्रिक मूल्य हानि हो)\*\***
4. **\*\*दमनकारी नीतियों की अंतरराष्ट्रीय वैधता बनाना\*\***
5. **\*\*प्रचार के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय जनमत को भ्रमित करना\*\***

□ **\*\*उदाहरण:\*\***

| देश | राजनयिक व्यवहार

|

| ----- | -----

- |

| □□ **\*\*चीन\*\*** | एकदलीय शासन के तहत विदेशी मामलों में सख्ती, सूचना नियंत्रण, और 'Wolf Warrior Diplomacy' |

| □□ **\*\*रूस\*\*** | सत्ता केंद्रित कूटनीति, सरकारी मीडिया के माध्यम से वैश्विक प्रचार

|

| □□ **\*\*उत्तर कोरिया\*\*** | सीमित कूटनीतिक संपर्क, परमाणु शक्ति के आधार पर धमकीपूर्ण रणनीति |

**\*\*प्रमुख उपकरण (Tools):\*\***

**\*\*सरकारी प्रचार तंत्र\*\*** (State Propaganda Machinery)

\* **\*\*राजनयिक धमकी (Diplomatic Threats)\*\*** \* **\*\*विकल्पहीन वार्ताएँ\*\*** (One-sided Negotiations) \* **\*\*सूचना युद्ध (Information Warfare)\*\***

\* \*\*जनता और मीडिया पर नियंत्रण\*\* \*

□ \*\*लोकतांत्रिक राजनय बनाम सर्वाधिकारवादी राजनय\*\* - तुलना:

| पक्ष | लोकतांत्रिक राजनय | सर्वाधिकारवादी राजनय |

| ----- | ----- | ----- |

| □ पारदर्शिता | अधिक | बहुत कम

| □ जन सहभागिता | अधिक | नगण्य

| □ स्वतंत्र मीडिया | मौजूद | नियंत्रित

| □ निर्णय प्रक्रिया | बहुपक्षीय | केंद्रीकृत

| □ संवाद की शैली | सहयोगी | आक्रामक/प्रभावशाली

□ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*सर्वाधिकारवादी राजनय\*\*** में कूटनीति का प्रयोग किसी राष्ट्र के व्यापक कल्याण की बजाय सत्ता और नियंत्रण बनाए रखने के लिए किया जाता है। यह प्रणाली **\*\*संवाद की जगह आदेश\*\***, और **\*\*कूटनीति की जगह प्रचार\*\*** पर आधारित होती है। हालाँकि कुछ समय के लिए यह राष्ट्र को रणनीतिक लाभ दे सकती है, पर दीर्घकाल में यह **\*\*वैश्विक विश्वास, सहयोग और शांति\*\*** के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

□ **\*\*दुकानदार जैसा राजनय बनाम यौद्धिक राजनय\*\***

(\*Diplomacy of the Shopkeeper vs. Warrior Diplomacy\*)

□ **\*\*परिचय:\*\***

अंतरराष्ट्रीय संबंधों और विदेश नीति की दुनिया में राष्ट्रों की कूटनीतिक शैली विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। इनमें से दो विशिष्ट प्रवृत्तियाँ हैं:

1. **\*\*दुकानदार जैसा राजनय\*\*** (Shopkeeper Diplomacy)

2. **\*\*यौद्धिक राजनय\*\*** (Warrior Diplomacy)

ये दोनों **\*\*राष्ट्रों की मानसिकता\*\***, **\*\*आर्थिक-सैनिक शक्ति\*\***, और **\*\*अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण\*\*** को दर्शाते हैं।

### **\*1. दुकानदार जैसा राजनय (Shopkeeper Diplomacy):\*\***

**\*\*परिभाषा:\*\*** यह वह राजनयिक शैली है जिसमें राष्ट्र अपनी विदेश नीति को **\*\*लाभ\*\***, **\*\*सौदेबाज़ी\*\***, **\*\*वाणिज्य\*\***, और **\*\*लचीलापन\*\*** के आधार पर चलाता है, जैसे एक दुकानदार ग्राहक से व्यवहार करता है।

\* □ **\*\*मुख्य लक्षण:\*\***

- |  |   |
|--|---|
| लक्षण                                      | विवरण   |
| □ <b>**लाभ आधारित दृष्टिकोण**</b>          | विदेश नीति में आर्थिक, राजनीतिक या सामरिक लाभ प्राथमिक होता है। |
| □ <b>**संवाद और समझौते को प्राथमिकता**</b> | युद्ध या टकराव से बचना।   |
| □ <b>**नरम कूटनीति (Soft Diplomacy)**</b>  | संयमित, संतुलित और आर्थिक हितों पर केंद्रित व्यवहार।            |
| □ <b>**बहुपक्षीय सहयोग**</b>               | अंतरराष्ट्रीय संगठनों, संधियों और वार्ताओं के माध्यम से कार्य।  |
| □ <b>**व्यापार और निवेश को बढ़ावा**</b>    | विदेश नीति के पीछे आर्थिक वृद्धि का उद्देश्य।                   |
- \*\*उदाहरण:\*\*** □ **\*\*ब्रिटेन (19वीं सदी में)\*\***: अपने व्यापारिक साम्राज्य के विस्तार हेतु कूटनीतिक समझौते।
- \* □□ **\*\*यूरोपीय संघ\*\***: संघर्षों की बजाय आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते पर बल।

### **\*\*2. यौद्धिक राजनय (Warrior Diplomacy):\*\***

□ **\*\*परिभाषा:\*\*** यह वह राजनयिक शैली है जिसमें राष्ट्र अपनी विदेश नीति को **\*\*बल\*\***, **\*\*सैन्य शक्ति\*\***, और **\*\*आक्रामक रणनीतियों\*\*** के माध्यम से संचालित करता है।

\* □ **\*\*मुख्य लक्षण:\*\***

- | लक्षण | विवरण
- | □ **\*\*सैन्य शक्ति पर बल\*\*** | कूटनीति का आधार शक्ति प्रदर्शन होता है।
- | □ **\*\*कम लचीलापन\*\*** | टकराव की स्थिति में समझौता नहीं, बल्कि दबाव बनाना।
- | □ **\*\*कठोर भाषा और चेतावनीपूर्ण बयान\*\*** | "अगर ऐसा नहीं किया गया तो परिणाम भुगतने होंगे" जैसी शैली।
- | □ **\*\*राष्ट्रवाद और सुरक्षा\*\*** | विदेश नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता।
- | □ **\*\*रणनीतिक प्रभुत्व\*\*** | पड़ोसी या प्रतिद्वंद्वी देशों पर वर्चस्व स्थापित करना उद्देश्य।

□ **\*\*उदाहरण:\*\*** □ **\*\*अमेरिका (इराक युद्ध 2003)\*\***: एकतरफा सैन्य हस्तक्षेप।

\* □ **\*\*रूस (यूक्रेन पर हमला 2022)\*\***: प्रत्यक्ष सैन्य कार्रवाई।

\* □ **\*\*"Wolf Warrior Diplomacy"\*\***: आक्रामक राजनयिक भाषा और शक्ति प्रदर्शन।

□ **\*\*तुलनात्मक विश्लेषण (Comparison Table):\*\***

| आधार | दुकानदार जैसा राजनय | यौद्धिक राजनय

| ----- | ----- | -----

| □ उद्देश्य | लाभ और सौदेबाज़ी | प्रभुत्व और शक्ति

| □ दृष्टिकोण | व्यावसायिक, शांतिपूर्ण | आक्रामक, सामरिक

| □ साधन | आर्थिक सहायता, वार्ता, गठबंधन | सैन्य शक्ति, धमकी, दबाव |

| □ नीति | समझौता, सहयोग | टकराव, प्रभुत्व

| □ शैली | नरम (Soft Power) | कठोर (Hard Power)

| □ टकराव की प्रवृत्ति | कम | अधिक

□ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** \*दुकानदार जैसा राजनय\*\* और **\*\*यौद्धिक राजनय\*\*** दोनों राष्ट्रों की कूटनीतिक मानसिकता और उनकी प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं।

□ जहाँ एक ओर दुकानदार शैली शांति, व्यापार और समझौते पर बल देती है, वहीं यौद्धिक शैली शक्ति, दबाव और प्रतिरोध की नीति अपनाती है।

□ **\*\*आज के वैश्विक युग में सफल राष्ट्र वही है जो दोनों का संतुलित उपयोग करना जानता है —\*\***

**\*\*"जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ कूटनीति; और जहाँ ज़रूरी हो, वहाँ शक्ति प्रदर्शन।"\***

□ **\*\*प्रचार द्वारा राजनय - संक्षिप्त नोट्स\*\***

**\*\*परिचय:\*\*** **\*\*प्रचार द्वारा राजनय\*\*** (Diplomacy through Propaganda) का अर्थ है - किसी राष्ट्र द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों, विदेश नीति, या विचारधारा को **\*\*जनसंचार माध्यमों\*\***, **\*\*सांस्कृतिक माध्यमों\*\***, या **\*\*सूचना तंत्रों\*\*** के ज़रिए इस प्रकार प्रचारित करना कि अंतरराष्ट्रीय जनमत उसके पक्ष में हो जाए। यह एक **\*\*मुलायम शक्ति (Soft Power)\*\*** का उपकरण है जो बिना प्रत्यक्ष टकराव के **\*\*राजनीतिक प्रभाव\*\*** स्थापित करता है।

**\*\*मुख्य उद्देश्य:\*\***

| उद्देश्य | विवरण

| □ विदेश नीति का समर्थन जुटाना | अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी नीति को न्यायसंगत ठहराना |

राष्ट्र की छवि को मज़बूत करना | सकारात्मक छवि बनाकर भरोसा स्थापित करना

| □ विरोधी प्रचार का खंडन | गलत या भ्रामक प्रचार के प्रभाव को कम करना

| □ शांति और सहयोग का वातावरण बनाना | राष्ट्र के साथ मैत्रीपूर्ण रवैया बनाने में मदद

**\*\*प्रचार द्वारा राजनय की विधियाँ:\*\***

1. **\*\*मीडिया प्रचार\*\*** - समाचार, टीवी, रेडियो, YouTube चैनल आदि से अपनी बात प्रसारित करना

2. **\*\*सोशल मीडिया कूटनीति (Digital Diplomacy)\*\*** - Twitter/X, Facebook, Instagram आदि से संवाद

3. **\*\*सांस्कृतिक प्रचार\*\*** - फिल्मों, कला, साहित्य, भाषा, नृत्य, संगीत के माध्यम से प्रभाव डालना

4. **\*\*शैक्षिक प्रचार\*\*** - विदेशी छात्रों के लिए स्कॉलरशिप, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

5. **\*\*राजनयिक बयानों और प्रेस विज्ञप्तियों के माध्यम से\*\*** - जैसे UN में भाषण

6. **\*\*जन कूटनीति (Public Diplomacy)\*\*** - सीधा विदेशी जनता से संवाद (जैसे मोदी का 'Howdy Modi' या 'Namaste Trump')

□ **\*\*प्रमुख उपकरण (Tools):\*\***

| उपकरण | उदाहरण

| □ सरकारी समाचार एजेंसियाँ | AIR, Doordarshan, BBC World Service

| □ डिजिटल चैनल्स | राजनयिक YouTube चैनल, वेबसाइट, ट्विटर हैंडल

| □ सांस्कृतिक केंद्र | ICCR, British Council, Confucius Institute

| □ शैक्षिक माध्यम | स्कॉलरशिप, विश्वविद्यालय सहयोग

| □ फिल्म और मीडिया | 'Incredible India', 'Make in India' जैसी अभियान फिल्में |

□ **\*\*प्रभाव / महत्व:\*\***

\* **\*\*लंबे समय तक जनमत निर्माण में सहायक\*\***

\* **\*\*संघर्षों को संवाद में बदलने की शक्ति\*\***

\* **\*\*सांस्कृतिक प्रभाव का विस्तार\*\***

\* **\*\*कूटनीतिक संबंधों की मज़बूती\*\***

\* **\*\*नरम शक्ति (Soft Power) को बढ़ावा\*\***

□ **\*\*कठोर बनाम नरम प्रचार कूटनीति:\*\***

| प्रकार | विशेषता |

| ----- | ----- |

| □ कठोर (Hard) | जबरन प्रचार, झूठा प्रचार, सैन्य पृष्ठभूमि से प्रेरित |

| □ नरम (Soft) | सांस्कृतिक, मानवीय और शैक्षिक प्रचार पर आधारित |

□ **\*\*उदाहरण:\*\***

\* **\*\*भारत का "Incredible India" प्रचार अभियान\*\***

\* **\*\*अमेरिका का Hollywood और CNN के माध्यम से प्रचार\*\***

\* **\*\*चीन का "Belt and Road Initiative" प्रचारित करना\*\***

\* **\*\*रूस का RT (Russia Today) चैनल द्वारा प्रचार\*\***

□ **\*\*निष्कर्ष:\*\*** **\*\*प्रचार द्वारा राजनय\*\*** आधुनिक युग की एक प्रभावशाली कूटनीतिक तकनीक है, जिसमें राष्ट्र **\*\*शक्ति के बजाय शब्द और छवि\*\*** के माध्यम से अपना प्रभाव बढ़ाते हैं। यह कूटनीति का ऐसा रूप है जो **\*\*जनता के दिल और दिमाग पर नियंत्रण के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय संबंधों\*\*** को आकार देता है।

